४७. क़यामत का इल्म अल्लाह ही की तरफ़ लौटाया जाता है, और जो-जो फल अपने गाभों में से निकलते हैं और जो मादा गर्भवती (हामला) होती है और जो बच्चा वह जन्म देती है, सब का इल्म उस को है,[1] और जिस दिन अल्लाह (तआला) उन (मूर्तिपूजकों) को बुलाकर पूछेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं; वे जवाब देंगे कि हम ने तो तुझ से कह दिया कि हम में से कोई उसका गवाह नहीं।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِن ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَائِي قَالُوا آذَنَّاكَ مَا مِنَّا مِن شَهِيدٍ ﴿47﴾

४८. और ये (जिन) जिन की पूजा इस से पहले करते थे वे उनकी नज़र से ओझल हो गये, और उन्होंने समझ लिया कि अब उन के लिए कोई बचाव (का रास्ता) नहीं।

وَضَلَّ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِن قَبْلُ ۖ وَظَنُّوا مَا لَهُم مِّن مَّحِيصٍ ﴿48﴾

४९. भलाई माँगने से इंसान थकता नहीं, और अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुँच जाये तो हताश (मायूस) और नाउम्मीद हो जाता है।[2]

لَّا يَسْأَمُ الْإِنسَانُ مِن دُعَاءِ الْخَيْرِ وَإِن مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ ﴿49﴾

५०. और जो कष्ट उसे पहुँच चुका है, उस के बाद अगर हम उसे किसी दया का मज़ा चखा दें तो वह कह उठता है कि मैं तो इसका हक़दार ही था, और मैं तो विचार नहीं कर सकता कि क़यामत क़ायम होगी और अगर मैं अपने रब की ओर लौटाया गया, तो भी बेशक उसके पास

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِن بَعْدِ ضَرَّاءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي وَمَا أَظُنُّ السَّاعَةَ قَائِمَةً وَلَئِن رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّي إِنَّ لِي عِندَهُ لَلْحُسْنَىٰ ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا وَلَنُذِيقَنَّهُم مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ ﴿50﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] यह अल्लाह के पूरा और व्यापक ज्ञान (वसीअ इल्म) का बयान है, और उस के इस ज्ञान गुण (अवसाफ़) में कोई उसका साझी नहीं, यहाँ तक कि अम्बिया (عليهم السلام) भी नहीं। उन्हें भी इतना ही ज्ञान होता है जितना अल्लाह तआला (परमेश्वर) उन्हें वह्यी के ज़रिये अता कर देता है।

[2] यानी मुसीबत पहुँचने पर तो तुरन्त मायूस हो जाता है, जबकि अल्लाह के नि:स्वार्थी (मुख़लिस) बन्दों की हालत इस से अलग होती है, एक तो वह दुनिया के लालची नहीं होते, उन के सामने हर पल आख़िरत ही होती है। दूसरे, दुख पहुँचने पर भी वे अल्लाह की नेमत और रहमत से निराश (मायूस) नहीं होते बल्कि इम्तेहानों को भी गुनाहों का बदला और पदोन्नति (तरक़्क़ी) का सबब मानते हैं, मानो निराशा (मायूसी) उन के क़रीब भी नहीं आती।

भी मेरे लिए भलाई होगी,[1] बेशक हम उन काफ़िरों को उन के अमल से बाख़बर (अवगत) करेंगे और उन्हें सख़्त (कठोर) अज़ाब का मज़ा चखायेंगे।

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى ٱلْإِنسَٰنِ أَعْرَضَ وَنَـَٔا بِجَانِبِهِۦ وَإِذَا مَسَّهُ ٱلشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ (51)

५१. और जब हम इंसान पर अपना उपकार करते हैं तो वह विमुख (गुमराह) हो जाता है और पहलू बदल लेता है; और जब उस पर दुख आता है तो बड़ी लम्बी-चौड़ी दुआयें करने वाला बन जाता है।[2]

قُلْ أَرَءَيْتُمْ إِن كَانَ مِنْ عِندِ ٱللَّهِ ثُمَّ كَفَرْتُم بِهِۦ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِى شِقَاقٍۭ بَعِيدٍ (52)

५२. (आप) कह दीजिए कि भला यह तो बताओ कि अगर यह (क़ुरआन) अल्लाह की तरफ़ से आया हुआ हो फिर तुम ने उसे न माना तो उस से बढ़कर बहका हुआ कौन होगा जो (सच से) विरोध (मुख़ालफ़त) में दूर चला जाये।

سَنُرِيهِمْ ءَايَٰتِنَا فِى ٱلْءَافَاقِ وَفِىٓ أَنفُسِهِمْ حَتَّىٰ يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ ٱلْحَقُّ ۗ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهُۥ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ شَهِيدٌ (53)

५३. जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियाँ दुनिया के किनारों में भी दिखायेंगे और ख़ुद उन के अपने वजूद में भी, यहाँ तक कि उन पर खुल जाये कि सच यही है। क्या आप के रब का हर चीज़ से अवगत (बाख़बर) होना काफ़ी नहीं।

أَلَآ إِنَّهُمْ فِى مِرْيَةٍ مِّن لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ۗ أَلَآ إِنَّهُۥ بِكُلِّ شَىْءٍ مُّحِيطٌۢ (54)

५४. यक़ीन करो कि यह लोग अपने रब के सामने पेश होने में सशंकित (शक में) हैं। याद रखो कि अल्लाह तआला हर चीज़ को घेरे हुए है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यह कहने वाला मुनाफ़िक (द्वयवादी) या काफ़िर है कोई ईमानवाला ऐसी बात नहीं कह सकता। काफ़िर ही यह समझता है कि मेरी दुनिया सुख से गुज़र रही है तो आख़िरत भी मेरे लिए ऐसी ही होगी।

[2] यानी अल्लाह के दरबार में रोता गिड़गिड़ाता है ताकि वह मुसीबत को दूर कर दे, यानी दुख में अल्लाह को याद करता है, सुख में भूल जाता है। मुसीबत आने के समय गुहार (फ़रियाद) करता है, ख़ुशी के समय उसे वह याद नहीं रहता।

सूरतुश्शूरा-४२

सूर: शूरा मक्का में नाज़िल हुई और इस में तिरपन आयतें और पाँच रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

१. हा॰मीम॰।

२. ऐन॰सीन॰क़ाफ़।

३. अल्लाह तआला जो ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है, इसी तरह तेरी तरफ़ और तुझ से पहले के लोगों की तरफ़ वह्यी भेजता रहा है।[1]

४. आकाशों की (सभी) चीज़ें और जो कुछ धरती में है सब उसी का है, और वह सब से बलन्द और बड़ा है।

५. क़रीब है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़ें और सारे फ़रिश्ते अपने रब की पाकीज़गी (महिमागान) (हम्द) के साथ बयान कर रहे हैं और धरती वालों के लिए क्षमा-याचना (इस्तिग़फ़ार) कर रहे हैं। ख़ूब समझ रखो कि अल्लाह (तआला) ही माफ़ करने वाला रहम करने वाला है।

سُورَةُ الشُّورٰى

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ﴿1﴾

عٓسٓقٓ ﴿2﴾

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ اِلَيْكَ وَ اِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ۙ اللهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿3﴾

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ ﴿4﴾

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰۗىِٕكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِنَّ اللهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿5﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] यानी जिस तरह यह क़ुरआन तेरी तरफ़ नाज़िल किया गया उसी तरह तुझ से पहले अम्बिया पर ग्रन्थ (सहीफ़े) और किताब नाज़िल की गईं, प्रकाशना (वह्यी) वह ईश्वाणी है जो फ़रिश्तों द्वारा अल्लाह तआला अपने पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) के पास भेजता रहा। एक सहाबी (सहचर) ने रसूलुल्लाह ﷺ से वह्यी की हालत पूछी तो आप ने फ़रमाया : कभी घंटी की आवाज़ की तरह आती है और यह मुझ पर सब से भारी होती है, जब यह ख़त्म हो जाती है तो मुझे याद हो चुकी होती है, और कभी फ़रिश्ता इंसानी रूप (शक्ल) में आता है और मुझ से बात करता है और वह जो कहता है मैं याद कर लेता हूं। हज़रत आयेशा رضي الله عنها कहती हैं कि मैंने कड़े जाड़े में देखा कि जब वह्यी की हालत ख़त्म होती तो आप पसीने से भीग जाते और आप की पेशानी से पसीने की बूंदें गिर रही होतीं। (सहीह बुख़ारी, बाबु बदइल वह्यी)

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ اللَّهُ حَفِيظٌ عَلَيْهِمْ وَمَا أَنتَ عَلَيْهِم بِوَكِيلٍ ﴿6﴾

६. और जिन लोगों ने उस के सिवाय दूसरों को औलिया बना लिया है। अल्लाह (तआला) उन्हें अच्छी तरह देख रहा है, और आप उन के उत्तरदायी (जवाबदेह) नहीं हैं।[1]

وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ قُرْآنًا عَرَبِيًّا لِّتُنذِرَ أُمَّ الْقُرَىٰ وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيهِ ۚ فَرِيقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيقٌ فِي السَّعِيرِ ﴿7﴾

७. और उसी तरह हम ने आप की तरफ़ अरबी क़ुरआन की वह्‌यी की है ताकि आप मक्का-वासियों को और उसके क़रीबी इलाक़े के लोगों को सावधान (आगाह) कर दें[2] और जमा होने के दिन से[3] जिस के आने में कोई शक नहीं, डरा दें, एक गुट जन्नत में होगा और एक गुट नरक में होगा।

وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً وَلَٰكِن يُدْخِلُ مَن يَشَاءُ فِي رَحْمَتِهِ ۚ وَالظَّالِمُونَ مَا لَهُم مِّن وَلِيٍّ وَلَا نَصِيرٍ ﴿8﴾

८. अगर अल्लाह (तआला) चाहता तो उन सब को एक ही उम्मत बना देता, लेकिन वह जिसे चाहता है अपनी दया (रहमत) में शामिल कर लेता है, और ज़ालिमों का पक्षधर (वली) और सहायक (मददगार) कोई नहीं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۖ فَاللَّهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِي الْمَوْتَىٰ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿9﴾

९. क्या उन लोगों ने अल्लाह (तआला) के सिवाय दूसरे वली बना लिये हैं, (हक़ीक़त में तो) अल्लाह (तआला) ही वली (संरक्षक) है, वही मुर्दों को ज़िन्दा करेगा और वही हर चीज़ पर क़ादिर है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यानी आप इस बात के उत्तरदायी नहीं कि उन को संमार्ग (हिदायत) पर चला दें या पापों पर उन की पकड़ करें बल्कि यह काम हमारे हैं, आप का काम सिर्फ़ संदेश (पैग़ाम) पहुँचा देना है।

[2] أم القرى (उम्मुल क़ुरा) मक्के का नाम है। इसे 'बस्तियों की माँ' इसलिए कहा गया कि यह अरब की सब से पुरानी बस्ती है, जैसेकि यह सभी बस्तियों की माँ है जिन्होंने इसी से जन्म लिया है, मुराद मक्का के निवासी हैं। ومن حولها में उस के पश्चिम और पूरब के सभी इलाक़े शामिल हैं, यानी उन सब को डराये कि अगर वे कुफ़्र और शिर्क से न फिरे तो अल्लाह के अज़ाब के पात्र (मुस्तहक़) होंगे।

[3] क़यामत के दिन को जमा होने का दिन इसलिए कहा कि उस में अगले-पिछले सभी इंसान जमा होंगे। इस के सिवाय, ज़ालिम, मज़लूम, ईमानदार और काफ़िर सब जमा होंगे और अपने-अपने अमल के एतबार से बदला या सज़ा पायेंगे।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهُ إِلَى اللَّهِ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبِّي عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيبُ (10)

१०. और जिस-जिस बात में तुम्हारा मतभेद (इख़्तेलाफ़) हो उसका फैसला अल्लाह (तआला) ही की ओर है,[1] यही अल्लाह मेरा रब है जिस पर मैंने भरोसा कर रखा है, और जिसकी तरफ़ मैं झुकता हूँ।

فَاطِرُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ مِنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ (11)

११. वह आकाश और धरती को पैदा करने वाला है। उस ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जाति के जोड़े बना दिये हैं और चौपायों के जोड़े बनाये हैं; तुम्हें वह उस में फैला रहा है, उस जैसी कोई चीज़ नहीं; वह सुनने वाला देखने वाला है।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَشَاءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (12)

१२. आकाशों और धरती की चाभियाँ उसी की हैं, जिसकी चाहे रोजी कुशादा कर दे और तंग कर दे, बेशक वह हर चीज़ का जानने वाला है।

شَرَعَ لَكُمْ مِنَ الدِّينِ مَا وَصَّىٰ بِهِ نُوحًا وَالَّذِي أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهِ إِبْرَاهِيمَ وَمُوسَىٰ وَعِيسَىٰ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ إِلَيْهِ اللَّهُ يَجْتَبِي إِلَيْهِ مَنْ يَشَاءُ وَيَهْدِي إِلَيْهِ مَنْ يُنِيبُ (13)

१३. अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर कर दिया है जिसको क़ायम करने का उस ने नूह (ﷺ) को हुक्म दिया था, जो (वह्यी के द्वारा) हम ने तेरी तरफ़ भेज दिया है और जिस का विशेष (ख़ास) हुक्म हम ने इब्राहीम और मूसा और ईसा (عليهم السلام) को दिया था।[2] कि इस दीन को क़ायम रखना और इसमें फूट न डालना,[3]

---

[1] इस मतभेद (इख़्तेलाफ़) से मुराद दीन का इख़्तेलाफ़ है। जैसे यहूदियत, इसाईयत और इस्लाम वग़ैरह में आपसी इख़्तेलाफ़ है और हर धर्म वाला लम्बा दावा करता है कि उसका धर्म सच्चा है, जबकि सभी धर्म एक समय में सही नहीं हो सकते। सच्चा दीन तो सिर्फ़ एक ही है और एक ही हो सकता है, दुनिया में सच्चे धर्म और सच्चे रास्ते की पहचान के लिए अल्लाह का क़ुरआन मौजूद है, लेकिन दुनिया में लोग इस ईशवाणी को अपना फ़ैसला करने वाला और हाकिम मानने को तैयार नहीं। आख़िर में फिर क़यामत (प्रलय) का दिन ही रह जाता है जिस में अल्लाह इस मतभेद का फ़ैसला करेगा और सच्चों को स्वर्ग में और दूसरों को नरक में दाख़िल करेगा।

[2] شَرَعَ का मतलब है बयान किया, वाज़ेह किया और मुक़र्रर किया, لَكُمْ तुम्हारे लिये। यह मोहम्मद (ﷺ) की उम्मत से संबोधन (ख़िताब) है। मतलब है कि तुम्हारे लिये वही शरीअत मुक़र्रर किया है जिसका हुक्म इस से पहले सभी अंबिया को दिया जाता रहा है, इस संदर्भ (तअल्लुक़ से) में कुछ श्रेष्ठ (अफ़ज़ल) अंबिया के नाम का बयान किया।

[3] सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत और उसी की इताअत (या उस के रसूल की पैरवी जो हक़ीक़त में अल्लाह ही की इताअत है) एकता और मेल-जोल का आधार (बुनियाद) है और उसकी

The Ummah Technology Mission

जिस चीज़ की तरफ़ आप उन्हें बुला रहे हैं वह तो (उन) मुश्रिकों पर भारी होती है। अल्लाह (तआला) जिसे चाहे अपना चुना हुआ बनाता है और जो भी उसकी तरफ़ ध्यानमग्न होता है वह उनकी ठीक हिदायत करता है।

وَمَا تَفَرَّقُوٓا إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ إِلَىٰٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتَٰبَ مِنۢ بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿14﴾

१४. और उन लोगों ने अपने पास इल्म आ जाने के बाद इख़्तिलाफ़ किया (और वह भी) आपसी हठधर्मी से, और अगर आप के रब की बात एक निश्चित (मुक़र्रर) समय तक के लिए पहले ही से मुक़र्रर की गयी हुई न होती तो बेशक उनका फ़ैसला हो चुका होता, और जिन लोगों को उन के बाद किताब दी गयी है वे भी उसकी तरफ़ से शक और शुब्हा में पड़े हुए हैं।[1]

فَلِذَٰلِكَ فَادْعُ ۖ وَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ ۖ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ ۖ وَقُلْ ءَامَنتُ بِمَآ أَنزَلَ اللَّهُ مِن كِتَٰبٍ ۖ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۖ لَنَآ أَعْمَٰلُنَا وَلَكُمْ أَعْمَٰلُكُمْ ۖ لَا حُجَّةَ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ ۖ اللَّهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۖ وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ﴿15﴾

१५. तो आप लोगों को उसी तरफ़ बुलाते रहें, और जो कुछ आप से कहा गया है उस पर मज़बूती से रहें, और उनकी इच्छाओं पर न चलें,[2] और कह दें कि अल्लाह तआला ने जितनी किताबें नाज़िल की हैं मेरा उन पर ईमान है, और मुझे हुक्म दिया गया है कि तुम में न्याय करता रहूँ, हमारा और तुम सब का रब अल्लाह ही है, हमारे अमल हमारे लिए हैं और तुम्हारे अमल तुम्हारे लिए हैं, हम तुम में कोई झगड़ा नहीं, अल्लाह (तआला) हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ़ लौट कर जाना है।

The Ummah Technology Mission

इबादत और इताअत से भागना या इन में दूसरों को साझी बनाना फूट और विच्छिन्नता (इन्तिशार) का सबब है, «जिस से फूट न डालना» कह कर रोका गया है।

[1] इस से मुराद यहूदी और इसाई हैं जो अपने से पहले के यहूदियों और इसाईयों के बाद किताब यानी धर्मशास्त्र तौरात और इंजील के उत्तराधिकारी (वारिस) बनाये गये, या अरबवासी मुराद हैं जिन में अल्लाह तआला ने अपना पाक क़ुरआन नाज़िल किया और उन्हें क़ुरआन का वारिस बनाया।

[2] यानी उन्होंने अपनी इच्छा से जो चीज़ें गढ़ ली हैं, जैसे मूर्तियों की पूजा आदि (वग़ैरह), इस में उन की आकांक्षा (ख़्वाहिशों) के पीछे न चलें।

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ﴿16﴾

१६. और जो लोग अल्लाह (तआला) की बातों में झगड़ा डालते हैं इस के बाद कि (सृष्टि) उसे मान चुकी है, उन का विवाद (झगड़ा) अल्लाह के क़रीब झूठ है[1] और उन पर क्रोध (ग़ज़ब) है और उन के लिए सख़्त अज़ाब है।

اَللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ﴿17﴾

१७. अल्लाह (तआला) ने हक़ के साथ किताब नाज़िल की है और तराज़ू भी (उतारी है) और आप को क्या पता कि शायद क़यामत क़रीब ही हो।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ﴿18﴾

१८. उसकी जल्दी उन्हें पड़ी है जो उस पर ईमान नहीं रखते और जो उस पर ईमान रखते हैं वे तो उस से डर रहे हैं और उन्हें उसे सच होने का पूरा ज्ञान (इल्म) है। याद रखो, जो लोग क़यामत के बारे में लड़-झगड़ रहे हैं[2] वे दूर की गुमराही में पड़े हुए हैं।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ﴿19﴾

१९. अल्लाह (तआला) अपने बंदों पर बड़ा ही कृपा करने वाला है, जिसे चाहता है ज़्यादा जीविका (रिज़्क़) देता है, और वह बड़ा ताक़तवर, बड़ा ज़बरदस्त है।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ﴿20﴾

२०. जिसका इरादा आख़िरत की खेती का हो हम उसे उसकी खेती में और वृद्धि (इज़ाफ़ा) करेंगे,[3] और जो दुनियावी खेती की कामना करता हो हम उसे उसमें से ही कुछ दे देंगे।[4] ऐसे इंसान

---

[1] داحضة का मतलब, कमज़ोर, बातिल के हैं जिसका टिकना नहीं।

[2] يُمارون (युमारून) مُمارَاةٌ से बना है। जिसका मतलब लड़ना-झगड़ना है या مِرْيَةٌ (मिर्यतुन) से है जिसका मतलब शक और शुब्हा है।

[3] حَرْثٌ का मतलब बीज बोना है, यहाँ रूपक (इस्तेआरा) के रूप में कर्मों (अमल) के फल और फ़ायदे पर बोला गया है, मतलब यह है कि जो इंसान संसार में अपने अमल और मेहनत के द्वारा आख़िरत की नेकी और बदला का चाहने वाला है तो अल्लाह उसकी आख़िरत की खेती में इस तरह बढ़ायेगा कि एक नेकी का पुण्य (सवाब) दस गुना से लेकर सात सौ गुना तक भी प्रदान (अता) करेगा।

[4] यानी दुनिया के चाहने वाले को दुनिया तो मिलती है लेकिन इतनी नहीं जितनी वह चाहता है,

The Ummah Technology Mission

का आख़िरत (परलोक) में कोई हिस्सा नहीं है ।[1]

२१. क्या उन लोगों ने ऐसे (अल्लाह के) साझीदार (मुक़र्रर कर रखे) हैं जिन्होंने ऐसे धार्मिक हुक्म मुक़र्रर कर दिये हैं, जो अल्लाह के कहे हुए नहीं हैं, अगर फ़ैसले के दिन का वादा न होता तो (अभी ही) उन में फ़ैसला कर दिया जाता । बेशक (उन) ज़ालिमों के लिए ही कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) हैं ।

أَمْ لَهُمْ شُرَكَٰٓؤُا۟ شَرَعُوا۟ لَهُم مِّنَ ٱلدِّينِ مَا لَمْ يَأْذَنۢ بِهِ ٱللَّهُ ۚ وَلَوْلَا كَلِمَةُ ٱلْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ ٱلظَّٰلِمِينَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ﴿21﴾

२२. आप देखेंगे कि (ये) ज़ालिम अपने अमल से डर रहे होंगे जो निःसंदेह (बेशक) उन पर घटित होने वाला है, और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम भी किये वे स्वर्ग के बाग़ों में होंगे, वे जो इच्छा (तमन्ना) करेंगे अपने रब के पास मौजूद पायेंगे, यही है बड़ा फ़ज़्ल ।

تَرَى ٱلظَّٰلِمِينَ مُشْفِقِينَ مِمَّا كَسَبُوا۟ وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۗ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ فِى رَوْضَاتِ ٱلْجَنَّاتِ ۖ لَهُم مَّا يَشَآءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ ٱلْفَضْلُ ٱلْكَبِيرُ ﴿22﴾

२३. यही वह है जिसकी ख़ुशख़बरी अल्लाह (तआला) अपने उन बंदों को दे रहा है जो ईमान लाये और (सुन्नत के अनुसार) अमल किये, तो कह दीजिए कि मैं उस पर तुम से कोई बदला नहीं चाहता लेकिन नातेदारी की मुहब्बत और जो इंसान नेकी करे हम उस की नेकी को और ज़्यादा बढ़ा देंगे । निश्चय ही अल्लाह (तआला) बड़ा माफ़ करने वाला बड़ा क़द्रदान है ।

ذَٰلِكَ ٱلَّذِى يُبَشِّرُ ٱللَّهُ عِبَادَهُ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَعَمِلُوا۟ ٱلصَّٰلِحَٰتِ ۗ قُل لَّآ أَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا ٱلْمَوَدَّةَ فِى ٱلْقُرْبَىٰ ۗ وَمَن يَقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهُۥ فِيهَا حُسْنًا ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ شَكُورٌ ﴿23﴾

The Ummah Technology Mission

बल्कि उतनी ही मिलती है जितनी अल्लाह की मर्जी और भाग्य-लेख के अनुसार होती है ।

[1] यह वही विषय है जो सूरः बनी इस्राईल १८ में भी बयान हुआ है । मतलब यह है कि दुनिया तो अल्लाह हर एक को ज़रूर देता है जितनी उस ने लिख दी है, क्योंकि उसने सब की जीविका (रोज़ी) का भार ले रखा है, दुनिया के इच्छुक (तलबगार) का भी और आख़िरत के इच्छुक का भी, फिर भी जो आख़िरत का काम और मेहनत करेगा तो क़यामत के दिन अल्लाह उसे कई गुना नेकी और प्रतिफल (अज्र) प्रदान करेगा, जब कि दुनिया के चाहने वाले के लिए आख़िरत में नरक के अज़ाब के अलावा कुछ नहीं होगा । अब यह इंसान को ख़ुद सोच लेना चाहिए कि उसका फ़ायेदा मायामोह में है या आख़िरत का इच्छुक बनने में ।

२४. क्या ये कहते हैं (कि पैग़म्बर ने) अल्लाह पर झूठा इल्ज़ाम धर लिया है, अगर अल्लाह (तआला) चाहे तो आप के दिल पर मुहर लगा दे और अल्लाह (तआला) अपनी बातों से झूठ को मिटा देता है और सच को बाक़ी रखता है। वह सीने की बातों का जानने वाला है।

أَمْ يَقُولُونَ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا ۖ فَإِن يَشَإِ اللَّهُ يَخْتِمْ عَلَىٰ قَلْبِكَ ۗ وَيَمْحُ اللَّهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهِ ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ (24)

२५. और वही है जो अपने बन्दों की तौबा को क़ुबूल करता है[1] और पापों को माफ़ करता है, और जो कुछ तुम कर रहे हो सब जानता है।

وَهُوَ الَّذِي يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهِ وَيَعْفُو عَنِ السَّيِّئَاتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ (25)

२६. और ईमानवालों और नेक लोगों की सुनता है और उन्हें अपनी कृपा (फ़ज़्ल) से और ज़्यादा देता है, और काफ़िरों के लिए सख़्त अज़ाब है।

وَيَسْتَجِيبُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَيَزِيدُهُم مِّن فَضْلِهِ ۚ وَالْكَافِرُونَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ (26)

२७. और अगर अल्लाह (तआला) अपने सब बन्दों की रोज़ी कुशादा कर देता तो वे धरती पर फ़साद मचा[2] देते, लेकिन वह अंदाज़ा से जो कुछ चाहता है नाज़िल करता है। वह अपने बंदों से अच्छी तरह बाख़बर है और अच्छी तरह देखने वाला है।

وَلَوْ بَسَطَ اللَّهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهِ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلَٰكِن يُنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَاءُ ۚ إِنَّهُ بِعِبَادِهِ خَبِيرٌ بَصِيرٌ (27)

२८. और वही है जो लोगों के निराश (मायूस) हो जाने के बाद वर्षा करता है और अपनी रहमत को विस्तार (कुशादा) कर देता है। वही है वली और बड़ाई और तारीफ़ के लायक़।

وَهُوَ الَّذِي يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِن بَعْدِ مَا قَنَطُوا وَيَنشُرُ رَحْمَتَهُ ۚ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيدُ (28)

The Ummah Technology Mission

---

[1] तौबा का मतलब है गुनाह पर पश्चाताप (नादिम) और शर्मिन्दा होना और भविष्य (मुस्तक़बिल) में उस को न करने का इरादा, केवल मुँह से तौबा-तौबा कर लेना या उस पाप और नाफ़रमानी के अमल को तो न छोड़ना और तौबा का दिखावा करना तौबा नहीं है, यह हँसी और मज़ाक़ है, फिर भी ख़ालिस और सच्ची तौबा अल्लाह ज़रूर क़ुबूल करता है।

[2] यानी अगर अल्लाह हर इंसान को आवश्यकता (हाजत) और ज़रूरत से ज़्यादा एक बराबर रोज़ी के साधन (वसायल) प्रदान कर देता तो उसका नतीजा यह होता कि कोई किसी की अधीनता (ताबेदारी) क़ुबूल न करता, हर इंसान फ़साद, बुराई और ज़ुल्म की हद तोड़ने में एक से बढ़ कर एक होता और दुनिया फ़साद से भर जाती।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ اِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ﴿29﴾

२९. और उसकी निशानियों में से आकाश और धरती का पैदा करना और उन में जीवधारियों का फैलाना है। वह इस पर भी क़ादिर है कि जब चाहे उन्हें जमा कर दे।[1]

وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ اَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ﴿30﴾

३०. और जो कुछ भी कष्ट तुम्हें पहुँचते हैं वह तुम्हारे अपने हाथों के करतूत का (बदला) है, और वह बहुत-सी बातों को माफ़ कर देता है।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ ۚ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿31﴾

३१. और तुम हमें धरती पर विवश (आजिज़) करने वाले नहीं हो, और तुम्हारे लिए अल्लाह (तआला) के सिवाय कोई वली नहीं है और न मदद करने वाला।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِى الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ﴿32﴾

३२. और समुद्र में चलने वाली पर्वतों जैसी नावें उसकी निशानियों में से हैं।[2]

اِنْ يَّشَاْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿33﴾

३३. अगर वह चाहे तो हवा बन्द कर दे और ये नवकायें समुद्र में रूकी रह जायें। बेशक इस में हर सब्र करने वाले शुक्र करने वाले के लिए निशानियाँ हैं।

اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ ﴿34﴾

३४. या उन्हें उन के करतूतों के सबब बरबाद कर दे।[3] वह तो बहुत-सी ग़लतियों को माफ़ कर देता है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] دَآبَّة (धरती पर चलने-फिरने वाला) का शब्द साधारण (आम) है, जिस में जिन्न और इन्सान के सिवाय सभी जीव शामिल हैं, जिन के रूप, रंग, बोलियाँ, आदतें, क़िस्में और जाति एक दूसरे से हमेशा अलग हैं और वह धरती में फैले हुए हैं, इन सभी को अल्लाह तआला क़यामत के दिन एक ही मैदान में जमा करेगा।

[2] الجوار (अलजेवार) या الجواري (अलजवारी) جارية जारियह (चलने वाली) का बहुवचन (जमा) है, मतलब है नवकायें, जहाज़। यह अल्लाह की पूरी क़ुदरत का सुबूत है कि सागरों में पर्वतों की तरह नवकायें और जहाज़ उसकी इजाज़त से चलते हैं नही तो वह इजाज़त दे तो यह सागरों में खड़े रह जायें।

[3] यानी समुद्र को हुक्म दे और उसकी लहरों में बाढ़ आ जाये और यह उन में डूब जायें।

وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿35﴾

३५. और ताकि जो लोग हमारी निशानियों में झगड़ते हैं वे मालूम कर लें कि उन के लिए कोई छुटकारा नहीं।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿36﴾

३६. तो तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह दुनियावी ज़िन्दगी का कुछ थोड़ा-सा साधन (ज़रिया) है और अल्लाह (तआला) के पास जो है वह उस से कई गुना बेहतर[1] और बाक़ी रहने वाला है, वह उन के लिए है जो ईमान लाये और केवल अपने रब पर ही भरोसा रखते हैं।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿37﴾

३७. और वे बड़े गुनाहों से और बेहयाई की बातों से बचते हैं और ग़ुस्सा के समय (भी) माफ़ कर देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪ وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿38﴾

३८. और अपने रब के हुक्म को क़ुबूल करते हैं, और नमाज़ को पाबन्दी से क़ायम करते हैं[2] और उनका हर काम आपसी राय-मशविरे से होता है[3] और जो कुछ हम ने उन्हें अता कर रखा है, उस में से (हमारे नाम पर) देते हैं।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿39﴾

३९. और जब उन पर ज़ुल्म (और क्रूरता) हो तो वे केवल बदला ले लेते हैं।[4]

The Ummah Technology Mission

---

[1] यानी अच्छे अमल का जो फल अल्लाह के पास मिलेगा वह दुनिया के सामानों से कहीं ज़्यादा बेहतर है और बाक़ी रहने वाला भी, क्योंकि उस का अन्त और तबाही नहीं। मतलब यह है कि दुनिया को आख़िरत पर प्रधानता (फ़ज़ीलत) न दो, ऐसा करोगे तो पछताओगे।

[2] नमाज़ की पाबन्दी और इक़ामत का ख़ास करके बयान किया गया है कि उपासना (एबादात) में इसकी सब से ज़्यादा अहमियत है।

[3] شُورى यह ذكرى और بُشرى के समान مفاعلة से धातु है। यानी ईमानवाले हर महत्वपूर्ण (अहम) काम आपसी राय-मशविरे से करते हैं, अपने ही ख़्याल को आख़िरी फ़ैसला नहीं समझते। ख़ुद नबी ﷺ को भी अल्लाह ने हुक्म दिया कि मुसलमानों से परामर्श (मश्विरा) करो। (आले इमरान-१५९)

[4] यानी बदला लेने से वह मजबूर नहीं हैं, अगर बदला लेना चाहें तो ले सकते हैं, फिर भी क़ुदरत होते हुए वह माफ़ी को प्रधानता (तरजीह) देते हैं। जैसे नबी ﷺ ने मक्का विजय के दिन अपने ख़ून के प्यासों के लिए आम माफ़ी का एलान कर दिया। हुदैबिया में आप ने ८० इंसानों को

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ (40)

४०. और बुराई का बदला उसी जैसी बुराई है, और जो माफ़ कर दे और सुधार कर ले तो उसका बदला अल्लाह के ऊपर है। हक़ीक़त में अल्लाह (तआला) जालिमों से मुहब्बत नहीं करता।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ؕ (41)

४१. और जो इंसान अपने मज़लूम होने के बाद (बराबर) बदला ले ले तो ऐसे इंसान पर (मज़म्मत का) कोई रास्ता नहीं।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (42)

४२. यह रास्ता केवल उन लोगों पर है जो ख़ुद दूसरे पर ज़ुल्म करें और धरती पर नाहक़ फ़साद मचाते फिरें, यही लोग हैं जिन के लिए कष्टदायी यातनायें (अज़ाब) हैं।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ؑ (43)

४३. और जो इंसान सब्र कर ले और माफ़ कर दे, तो बेशक यह एक बड़े हिम्मत के कामों में से (एक काम) है।

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ۚ (44)

४४. और जिसे अल्लाह (तआला) भटका दे उसका उस के बाद कोई वली नहीं, और तू देखेगा कि जालिम लोग अज़ाबों को देखकर कह रहे होंगे कि क्या वापस लौटने का कोई रास्ता है?

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِىْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ (45)

४५. और तू उन्हें देखेगा कि वे (नरक के) सामने ला खड़े किये जायेंगे, अपमान के कारण झुके जाते होंगे और कनखियों से देख रहे होंगे, ईमान वाले वाज़ेह तौर से कहेंगे कि हक़ीक़त में नुक़सान उठाने वाले वे हैं, जिन्होंने आज क़यामत के दिन अपने आप को और अपने परिवार को नुक़सान में डाल दिया। याद रखो कि बेशक ज़ालिम लोग हमेशा रहने वाले अज़ाब में हैं।

The Ummah Technology Mission

माफ़ कर दिया जिन्होंने आप के विरोध में साजिश रचा था। लबीद बिन आसिम यहूदी से बदला नही लिया जिसने आप पर जादू किया था, उस यहूदी नारी को आप ने कुछ नहीं कहा जिसने आप के खाने में ज़हर मिला दिया था, जिसका दर्द आप सारी ज़िन्दगी महसूस करते रहे ﷺ। (इब्ने कसीर)

४६. और उनकी कोई मदद करने वाला नहीं, जो अल्लाह (तआला) से अलग उनकी मदद कर सकें, और जिसे अल्लाह भटका दे तो उस के लिए कोई रास्ता ही नहीं।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ أَوْلِيَاءَ يَنصُرُونَهُم مِّن دُونِ اللَّهِ ۗ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن سَبِيلٍ ﴿46﴾

४७. अपने रब का हुक्म मान लो इस से पहले कि अल्लाह की तरफ़ से वह दिन आ जाये जिसका हट जाना नामुमकिन है। तुम्हें उस दिन न तो कोई पनाह की जगह मिलेगी और न छिप कर अन्जान बन जाने की।

اسْتَجِيبُوا لِرَبِّكُم مِّن قَبْلِ أَن يَأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهُ مِنَ اللَّهِ ۚ مَا لَكُم مِّن مَّلْجَإٍ يَوْمَئِذٍ وَمَا لَكُم مِّن نَّكِيرٍ ﴿47﴾

४८. अगर वे विमुख हो जायें तो हम ने आप को उन पर रक्षक (निगराँ) बना कर नहीं भेजा। आप का फ़र्ज़ तो केवल संदेश (पैग़ाम) पहुँचा देने का है और जब हम इंसान को अपनी रहमत का मज़ा चखाते हैं, तो वह उस पर इतराने लग जाता है, और अगर उन्हें उन के अमल की वजह से कोई कठिनाई आती है तो निश्चय इंसान बड़ा नाशुक्रा है।

فَإِنْ أَعْرَضُوا فَمَا أَرْسَلْنَاكَ عَلَيْهِمْ حَفِيظًا ۖ إِنْ عَلَيْكَ إِلَّا الْبَلَاغُ ۗ وَإِنَّا إِذَا أَذَقْنَا الْإِنسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۖ وَإِن تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ فَإِنَّ الْإِنسَانَ كَفُورٌ ﴿48﴾

४९. आकाशों और धरती का मुल्क अल्लाह (तआला) ही के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है, जिसको चाहता है पुत्रियाँ देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है।

لِّلَّهِ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَاءُ ۚ يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ إِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذُّكُورَ ﴿49﴾

५०. या उन्हें जमा कर देता है[1] पुत्र भी और पुत्रियाँ भी, और जिसे चाहे बाँझ कर देता है, वह बड़े इल्म वाला और क़ुदरत वाला है।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَإِنَاثًا ۖ وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيمًا ۚ إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ ﴿50﴾

---

[1] यानी जिसको चाहता है पुत्र-पुत्री दोनों देता है। इस जगह पर अल्लाह ने लोगों का चार दर्जा बयान किया है, एक वह जिन को केवल पुत्र देता है, दूसरे वह जिन को केवल पुत्रियाँ देता है, तीसरे वह जिनको पुत्र-पुत्रियाँ दोनों देता है और चौथे वह जिनको पुत्र न पुत्री। लोगों में यह फ़र्क़ और भेद (राज़) अल्लाह की क़ुदरत की निशानियों में से है। इस क़ुदरती फ़र्क़ को दुनिया की कोई ताक़त बदल नहीं सकती, यह बटवारा औलाद के हिसाब से है, पिता के हिसाब से भी इंसानों के चार क़िस्में हैं। आदम ﷺ को केवल मिट्टी से बनाया, उन के न पिता हैं न माता २- हव्वा को आदम यानी मर्द से पैदा किया, उनकी माता नहीं ३- हज़रत ईसा को केवल औरत से पैदा किया, उन के पिता नहीं, ४- और बाक़ी सभी इंसानों को नर-नारी दोनों के मिलान से, उन के पिता भी है और माता भी। فسبحان الله العليم القدير (इब्ने कसीर)

The Ummah Technology Mission

५१. और नामुमकिन है कि किसी बंदे से अल्लाह (तआला) कलाम करे, लेकिन वह्‌यी के रूप में या पर्दे के पीछे से या किसी फ़रिश्ते को भेजे, और वह अल्लाह के हुक्म से जो वह चाहे वह्‌यी करे।[1] बेशक वह सबसे बड़ा और हिक्मत वाला है।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿51﴾

५२. और इसी तरह हम ने आप की तरफ़ अपने हुक्म से रूह (आत्मा) को नाज़िल किया है,[2] आप उस से पहले यह भी नहीं जानते थे कि किताब और ईमान क्या चीज़ है? लेकिन हम ने उसे नूर बनाया, उस के ज़रिये अपने बंदों में से जिसे चाहते हैं हिदायत देते हैं। बेशक आप सच्चे रास्ते की हिदायत करा रहे हैं।

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ؕ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ؕ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿52﴾

५३. उस अल्लाह के रास्ते की[3] जिसकी मिल्कियत में आकाशों और धरती की हर चीज़ है। ख़बरदार रहो, सभी काम अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْاُمُوْرُ ﴿53﴾

सूरतुज़ ज़ुख़रुफ़-४३

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ

सूरः ज़ुख़रुफ़ मक्का में नाज़िल हुई और इस में नवासी आयतें और सात रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

The Ummah Technology Mission

[1] इस आयत में अल्लाह की वह्‌यी के तीन रूप बताये गये हैं। पहला यह कि दिल में कोई बात डाल देना या ख़्वाब में बतला देना, इस यक़ीन के साथ कि यह अल्लाह ही की तरफ़ से है। दूसरा, पर्दे के पीछे से बात करना, जैसे ईशदूत मूसा से तूर पहाड़ पर की गई। तीसरा, फ़रिश्ते द्वारा अपनी वह्‌यी भेजना, जैसे जिब्रील عليه السلام अल्लाह का पैग़ाम लेकर आते और पैग़म्बरों को सुनाते थे।

[2] यहां رُوْح से मुराद ईशवाणी (कलामे इलाही) पाक क़ुरआन है, यानी जैसे आप से पहले दूसरे रसूलों पर हम वह्‌यी करते रहे, वैसे ही हम ने आप पर क़ुरआन की वह्‌यी की है। पाक क़ुरआन को रूह (आत्मा) कहा गया है कि क़ुरआन से दिलों को जीवन मिलता है, जैसे रूह में इंसानी ज़िन्दगी का भेद (राज़) छिपा है।

[3] यह صراط مستقیم (सिराते मुस्तक़ीम) सीधा रास्ता इस्लाम है, उसे अल्लाह ने अपनी तरफ़ सम्बन्धित (मंसूब) किया है जिस से इस रास्ते की सच्चाई और प्रतिष्ठा (अज़मत) वाज़ेह (स्पष्ट) होती है और उस के एक अकेले नजात का रास्ता होने की तरफ़ इशारा भी है।

حٰمٓ ﴿1﴾

१. हा॰मीम॰।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

२. क़सम है इस खुली किताब की।

اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿3﴾

३. हम ने इस को अरबी भाषा का क़ुरआन बनाया है कि तुम समझ लो।

وَاِنَّهٗ فِيْۤ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿4﴾

४. और बेशक यह सुरक्षित (महफ़ूज़) किताब में है और हमारे नज़दीक ऊँचे दर्जे की है, हिक्मत से भरी है।[1]

اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿5﴾

५. क्या हम इस सदुपदेश (ज़िक्र) को तुम से इस आधार पर हटा लें कि तुम सीमा (हद) तोड़ने वाले लोग हो।

وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿6﴾

६. और हम ने पिछली जातियों में भी बहुत से नबी भेजे।

وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿7﴾

७. और जो नबी उन के पास आया उन्होंने उसका मज़ाक उड़ाया।

فَاَهْلَكْنَاۤ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿8﴾

८. तो हम ने उन से ज़्यादा बलवानों को[2] बरबाद कर डाला और अगलों की मिसाल गुज़र चुकी है।

وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿9﴾

९. और अगर आप उन से पूछें कि आकाशों और धरती को किस ने पैदा किया तो बेशक उनका जवाब होगा कि उन्हें सब से ज़बरदस्त और सब से ज़्यादा जानने वाले (अल्लाह ही) ने पैदा किया है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] इस में क़ुरआन की उस महानता (अज़मत) और प्रधानता (फ़ज़ीलत) का बयान है जो उच्च लोक (आलमे बाला) में उसे हासिल है, ताकि दुनिया वाले भी उसकी महानता और मर्यादा (इज़्ज़त) को ध्यान में रखते हुए उसे महत्व (अहमियत) दें और उस से हिदायत का वह मक़सद हासिल करें जिस के लिए उसे संसार में उतारा गया है। أم الكتاب (मूलग्रंथ) से मुराद लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) है।

[2] यानी मक्कावासियों से ज़्यादा बलवान थे, जैसे दूसरी जगह पर फ़रमाया: ﴿كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً﴾ "वह तादाद और बल (क़ूवत) में कहीं उन से ज़्यादा थे।" (अलमोमिन-८२)

१०. (वही है) जिस ने तुम्हारे लिये धरती को फ़र्श (और विछौना) बनाया[1] और उस में तुम्हारे लिए रास्ता बना दिये ताकि तुम रास्ता पा लिया करो।

الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَجَعَلَ لَكُمْ فِيهَا سُبُلًا لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿10﴾

११. और उसी ने आकाश से एक अंदाजे के अनुसार वर्षा की, तो हम ने उस से मुर्दा नगर को ज़िन्दा कर दिया। उसी तरह तुम निकाले जाओगे।

وَالَّذِي نَزَّلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَنْشَرْنَا بِهِ بَلْدَةً مَيْتًا كَذَلِكَ تُخْرَجُونَ ﴿11﴾

१२. और जिस ने सभी चीज़े के जोड़े[2] बनाये और तुम्हारी (सवारी के) लिए नवकायें बनायीं और चौपाये जानवर पैदा किये जिन पर तुम सवार होते हो।

وَالَّذِي خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُونَ ﴿12﴾

१३. ताकि तुम उन की पीठ पर जमकर सवार हुआ करो, फिर अपने रब के (दिये हुए) उपहारों (नेमतों) को याद करो जब उस पर ठीक-ठाक बैठ जाओ और कहो कि पाक ताक़त है उसकी जिस ने उसे हमारे वश में कर दिया, यद्यपि (अगरचे) हमें उसे वश में करने की ताक़त नहीं थी।

لِتَسْتَوُوا عَلَى ظُهُورِهِ ثُمَّ تَذْكُرُوا نِعْمَةَ رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ ﴿13﴾

१४. और निश्चित (यक़ीनी) रूप से हम अपने रब की तरफ़ लौटकर जाने वाले हैं।[3]

وَإِنَّا إِلَى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ ﴿14﴾

The Ummah Technology Mission

---

[1] ऐसा बिस्तर जिस में ठहराव और सुकून हो, तुम इस पर चलते हो, खड़े होते हो और सोते हो, जहाँ चाहते चलते-फिरते हो, उस ने उसको पहाड़ो के ज़रिये स्थिर (साकिन) कर दिया ताकि उस में गति (हरकत) और कंपन न हो।

[2] हर चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया, नर-मादा, वनस्पतियाँ-खेतियाँ, फल-फूल और प्राणी सब में नर-मादा का अमल है। कुछ कहते हैं कि इस से मुराद एक-दूसरे की प्रतिकूल (मुख़ालिफ़) चीज़ें हैं, जैसे उजाला और अंधेरा, रोग और सेहत, इंसाफ़ और ज़ुल्म, भलाई और बुराई, ईमान (विश्वास) और कुफ़्र (इंकार) नरमी और सख़्ती वग़ैरह। कुछ कहते हैं कि जोड़ा, क़िस्म के मायने में है यानी सभी क़िस्मों का बनाने वाला अल्लाह है।

[3] नबी ﷺ जब सवारी पर सवार होते तो तीन बार الله اكبر (अल्लाहु अकबर) कहते और سبحان الذى से لمنقلبون तक आयत पढ़ते। इसके सिवाय भलाई और कामयाबी के लिए दुआ करते जो दुआओं की किताबों में देख ली जाये। (सहीह मुस्लिम, किताबुल हज्ज, बाबु मायक़ूलु इज़ा रकिब .....)

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ۚ إِنَّ الْإِنسَانَ لَكَفُورٌ مُّبِينٌ ﴿15﴾

१५. और उन्होंने अल्लाह के कुछ वन्दों को उसका हिस्सा वना दिया, वेशक इंसान वाज़ेह तौर से नाशुक्रा है।

أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُم بِالْبَنِينَ ﴿16﴾

१६. क्या अल्लाह (तआला) ने अपनी मख़लूक में से पुत्रियाँ तो ख़ुद रख लीं और तुम्हें पुत्रों से सुशोभित (मुजय्यन) किया?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿17﴾

१७. (यद्यपि) उन में से किसी को जव उस चीज़ की ख़बर दी जाती है जिसकी मिसाल उस ने अल्लाह दयालु (रहमान) के लिए बयान किया है तो उसका मुँह काला पड़ जाता है और वह ग़मगीन हो जाता है।

أَوَمَن يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ ﴿18﴾

१८. या क्या (अल्लाह की औलाद पुत्रियाँ हैं) जो गहनों में पलें और झगड़े में (अपनी वात) साफ़ न कर सकें?[1]

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ۚ أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ ۚ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ ﴿19﴾

१९. और उन्होंने दयालु (रहमान) की इवादत करने वाले फ़रिश्तों को औरत वना दिया। क्या उनकी पैदाईश के समय वे मौजूद थे? उनकी यह गवाही लिख ली जायेगी और उन से उसकी पूछताछ की जायेगी।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُم ۗ مَّا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ﴿20﴾

२०. और कहते हैं कि अल्लाह (तआला) चाहता तो हम उनकी इवादत न करते, उन्हें उसका

---

[1] औरतों के दो गुणों (सिफ़्तों) का वयान यहाँ ख़ास तौर से किया गया है। १- उनका पालन-पोषण गहनों और ज़ीनत में होता है, यानी वोध (शउर) की आँखें खुलते ही उनका ध्यान शोभा (ज़ीनत) और ख़ूबसूरती की चीज़ों की तरफ़ हो जाता है, इस वयान से मतलव यह है कि जिनकी हालत यह है, वे अपनी शख़सियत का सुधार करने की भी योग्यता और क्षमता नहीं रखतीं। २- अगर किसी से वाद-विवाद हो तो वह अपनी वात भी सही ढंग से (प्राकृतिक (फ़ितरी) शर्म की वजह से) स्पष्ट (वाज़ेह) नहीं कर सकती, न अपने प्रतिद्वंदी (मुक़ाविल) के दलील की तोड़ ही कर सकती हैं, यह औरत की वह दो फ़ितरी कमज़ोरियाँ हैं जिन की वजह से पुरूष स्त्री पर एक गुणा प्रधानता (फ़ज़ीलत) रखते हैं। जुमले के ऐतवार से भी पुरूष की प्रधानता साफ़ है, क्योंकि वात इसी धारे में यानी नर-नारी में जो अमली फ़र्क है, जिस के कारण (सवव) वच्ची के मुक़ाविले में वच्चे के जन्म को ज़्यादा पसन्द किया जाता था, हो रही है।

The Ummah Technology Mission

कुछ ज्ञान (इल्म) नहीं, यह तो केवल अटकल वाली (झूठी बातें) कहते हैं।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِّن قَبْلِهِ فَهُم بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ ﴿21﴾

२१. क्या हम ने इस से पहले उन्हें (दूसरी) कोई किताब अता की है, जिसे ये मज़बूती से पकड़े हुए हैं?

بَلْ قَالُوا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّهْتَدُونَ ﴿22﴾

२२. (नहीं-नहीं) बल्कि ये तो कहते हैं कि हम ने अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को एक धर्म पर पाया और हम उन्हीं के निशाने क़दम पर चल कर संमार्ग (हिदायत) प्राप्त हैं।

وَكَذَٰلِكَ مَا أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ فِي قَرْيَةٍ مِّن نَّذِيرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوهَا إِنَّا وَجَدْنَا آبَاءَنَا عَلَىٰ أُمَّةٍ وَإِنَّا عَلَىٰ آثَارِهِم مُّقْتَدُونَ ﴿23﴾

२३. और इसी तरह आप से पहले भी हम ने जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा, वहां के ख़ुशहाल लोगों ने यही जवाब दिया कि हम ने अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को (एक डगर पर और) एक धर्म पर पाया और हम तो उन्हीं के पद चिन्हों (निशाने क़दम) की पैरवी करने वाले हैं।

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكُم بِأَهْدَىٰ مِمَّا وَجَدتُّمْ عَلَيْهِ آبَاءَكُمْ ۖ قَالُوا إِنَّا بِمَا أُرْسِلْتُم بِهِ كَافِرُونَ ﴿24﴾

२४. (नबी ने) कहा भी कि यद्यपि (अगरचे) मैं उस से बहुत बेहतर (मक़सद तक पहुँचाने वाला) रास्ता लेकर आया हूँ जिस पर तुम ने अपने पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को पाया, तो उन्होंने जवाब दिया कि हम उसे नहीं मानने वाले हैं जिसे देकर तुम्हें भेजा गया है।[1]

فَانتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۖ فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِينَ ﴿25﴾

२५. तो हम ने उन से इन्तिक़ाम लिया और देख ले झुठलाने वालों का क्या नतीजा हुआ?

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ إِنَّنِي بَرَاءٌ مِّمَّا تَعْبُدُونَ ﴿26﴾

२६. और जबकि इब्राहीम (عليه السلام) ने अपने पिता से और अपनी क़ौम से कहा कि मैं इन बातों से अलग हूँ जिन की तुम इबादत करते हो।

The Ummah Technology Mission

[1] यानी अपने बुज़ुर्गों की पैरवी में इतने पक्के थे कि पैग़म्बर का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) और दलील भी उन्हें फेर नहीं सकी। यह आयत अन्धी पैरवी के खंडन (तरदीद) और उसकी निंदा (मुज़म्मत) पर बहुत बड़ा सुबूत है। (देखिये शौकानी की फ़तहुल क़दीर)

إِلَّا الَّذِي فَطَرَنِي فَإِنَّهُ سَيَهْدِينِ (27)

२७. सिवाय उस ताक़त के जिस ने मुझे पैदा किया है और वही मेरी हिदायत भी करेगा ।[1]

وَجَعَلَهَا كَلِمَةً بَاقِيَةً فِي عَقِبِهِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ (28)

२८. और इब्राहीम (ﷺ) उसी को अपनी औलाद में भी बाक़ी रहने वाली बात क़ायम कर गये ताकि लोग (शिर्क से) बचते रहें ।[2]

بَلْ مَتَّعْتُ هَٰؤُلَاءِ وَآبَاءَهُمْ حَتَّىٰ جَاءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُولٌ مُبِينٌ (29)

२९. बल्कि मैंने उन लोगों को और उन के पूर्वजों को सामान (और ज़रिया) अता किया यहाँ तक कि उन के पास सच और वाज़ेह तौर से सुनाने वाला रसूल आ गया ।

وَلَمَّا جَاءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوا هَٰذَا سِحْرٌ وَإِنَّا بِهِ كَافِرُونَ (30)

३०. और सच के पहुँचते ही ये बोल पड़े कि यह तो जादू है, और हम इस का इंकार करने वाले हैं ।

وَقَالُوا لَوْلَا نُزِّلَ هَٰذَا الْقُرْآنُ عَلَىٰ رَجُلٍ مِنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيمٍ (31)

३१. और कहने लगे कि यह क़ुरआन इन दोनों बस्तियों में से किसी ख़ुशहाल इंसान पर क्यों नाज़िल नहीं किया गया ।[3]

أَهُمْ يَقْسِمُونَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ۚ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَعِيشَتَهُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا ۚ وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجَاتٍ لِيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ۗ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِمَّا يَجْمَعُونَ (32)

३२. क्या आप के रब की रहमत को ये तक़सीम करते हैं? हम ने ही उनकी दुनियावी ज़िन्दगी का रिज़्क़ उन में तक़सीम किया है और एक को दूसरे से बेहतर किया है ताकि एक-दूसरे को अधीन (ताबे) कर ले, और जिसे ये लोग जमा करते फिरते हैं, उस से आप के रब

The Ummah Technology Mission

---

[1] यानी जिस ने मुझे पैदा किया है, वह अपने धर्म की समझ भी मुझे देगा और उस पर क़ायम भी रखेगा, मैं सिर्फ़ उसी की इबादत करूँगा ।

[2] यानी इब्राहीम की औलाद में यह एकेश्वरवादी (मुवहि्हद) इसलिए पैदा किये ताकि उन की तौहीद (अद्वैत) की नसीहत से लोग शिर्क (मिश्रणवाद) से रूकते रहें । لعلهم में ज़मीर मक्कावासियों की तरफ़ फिरता है । यानी शायद मक्कावासी इस धर्म की तरफ़ लौट आयें जो ईशदूत हज़रत इब्राहीम का दीन था जो ख़ालिस तौहीद पर आधारित (मबनी) था न कि शिर्क (बहुदेववाद) पर ।

[3] दोनों नगरों से मुराद मक्का और ताएफ़ है, और बड़े व्यक्तियों से मुराद ज़्यादातर भाष्यकारों (मुफ़स्सिरों) के क़रीब मक्का का वलीद पुत्र मुग़ीरह और ताएफ़ का उरवह पुत्र मसऊद सक़फ़ी है । कुछ ने और दूसरे लोगों के नाम उल्लेख (ज़िक्र) किये हैं ।

की रहमत बहुत बेहतर है।[1]

३३. और अगर यह बात नहीं होती कि सभी लोग एक ही तरीके पर हो जायेंगे तो दयालु (रहमान) के साथ कुफ्र करने वालों के घरों की छतों को हम चाँदी की बना देते और सीढ़ियों को भी जिन पर वे चढ़ा करते।

وَلَوْلَآ أَن يَكُونَ ٱلنَّاسُ أُمَّةً وَٰحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَن يَكْفُرُ بِٱلرَّحْمَٰنِ لِبُيُوتِهِمْ سُقُفًا مِّن فِضَّةٍ وَمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُونَ (33)

३४. और उन के घरों के दरवाज़ों और तख़्त (आसन) तक भी जिन पर वे तकिया लगा-लगा कर बैठते।

وَلِبُيُوتِهِمْ أَبْوَٰبًا وَسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِـُٔونَ (34)

३५. और सोने के भी, और ये सब कुछ यूं ही सा दुनियावी फ़ायेदा है और आख़िरत तो आप के रब के क़रीब केवल परहेज़गारों के लिए (ही) है।

وَزُخْرُفًا ۚ وَإِن كُلُّ ذَٰلِكَ لَمَّا مَتَٰعُ ٱلْحَيَوٰةِ ٱلدُّنْيَا ۚ وَٱلْـَٔاخِرَةُ عِندَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِينَ (35)

३६. और जो इंसान अल्लाह की याद से सुस्ती करे हम उस पर एक शैतान निर्धारित (मुक़र्रर) कर देते हैं; वही उसका साथी रहता है।

وَمَن يَعْشُ عَن ذِكْرِ ٱلرَّحْمَٰنِ نُقَيِّضْ لَهُۥ شَيْطَٰنًا فَهُوَ لَهُۥ قَرِينٌ (36)

३७. और वह उन्हें रास्ते से रोकते हैं और यह उसी ख़्याल में रहते हैं कि यह हिदायत याफ़्ता हैं।

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّونَهُمْ عَنِ ٱلسَّبِيلِ وَيَحْسَبُونَ أَنَّهُم مُّهْتَدُونَ (37)

३८. यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो कहेगा कि काश मेरे और तेरे बीच पूरब और पश्चिम की दूरी होती, तू बड़ा बुरा साथी है।

حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءَنَا قَالَ يَٰلَيْتَ بَيْنِى وَبَيْنَكَ بُعْدَ ٱلْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ ٱلْقَرِينُ (38)

३९. और जबकि तुम ज़ालिम साबित हो चुके तो तुम्हें आज कभी भी तुम सब के अज़ाब में शरीक होना कोई फ़ायदेमंद न होगा।

وَلَن يَنفَعَكُمُ ٱلْيَوْمَ إِذ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِى ٱلْعَذَابِ مُشْتَرِكُونَ (39)

४०. तो क्या तू बहरे को सुना सकता है या अंधे को रास्ता दिखा सकता है और उसे जो खुली गुमराही में हो।

أَفَأَنتَ تُسْمِعُ ٱلصُّمَّ أَوْ تَهْدِى ٱلْعُمْىَ وَمَن كَانَ فِى ضَلَٰلٍ مُّبِينٍ (40)

[1] इस رحمت रहमत (दया) से मुराद आख़िरत के वह वरदान हैं जो अल्लाह ने अपने नेक बंदों के लिए तैयार कर रखे हैं।

The Ummah Technology Mission

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُم مُّنتَقِمُونَ ﴿41﴾

४१. फिर अगर हम तुझे यहाँ से ले भी जायें तो भी हम उन से बदला लेने वाले हैं।

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِي وَعَدْنَاهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِم مُّقْتَدِرُونَ ﴿42﴾

४२. या जो कुछ उन से वादा किया है वह तुझे दिखा दें; हम उन पर भी क़ुदरत रखते हैं।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِي أُوحِيَ إِلَيْكَ ۖ إِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿43﴾

४३. तो जो वह्‌यी आप की तरफ़ की गयी है उसे मज़बूती से थामे रहें। बेशक आप सीधे रास्ते पर हैं।

وَإِنَّهُ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۖ وَسَوْفَ تُسْأَلُونَ ﴿44﴾

४४. और बेशक यह (ख़ुद) आप के लिए और आप की जाति के लिए नसीहत है और क़रीब भविष्य (मुस्तक़बिल) में तुम लोग पूछे जाओगे।

وَاسْأَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِن قَبْلِكَ مِن رُّسُلِنَا أَجَعَلْنَا مِن دُونِ الرَّحْمَٰنِ آلِهَةً يُعْبَدُونَ ﴿45﴾

४५. और हमारे उन नबियों से मालूम करो जिन्हें हम ने[1] आप से पहले भेजा था कि क्या हम ने रहमान के सिवाय दूसरे माबूद निर्धारित (मुक़र्रर) किये थे जिन की इबादत की जाये?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَمَلَئِهِ فَقَالَ إِنِّي رَسُولُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿46﴾

४६. और हम ने मूसा (عليه السلام) को अपनी निशानियाँ देकर फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास भेजा तो(मूसा ने जाकर) कहा कि मैं सारे जहाँ के रब का रसूल (संदेशवाहक) हूँ।

فَلَمَّا جَاءَهُم بِآيَاتِنَا إِذَا هُم مِّنْهَا يَضْحَكُونَ ﴿47﴾

४७. तो जब वह हमारी निशानियाँ लेकर उन के पास आये तो वे अचानक उन पर हँसने लगे।

وَمَا نُرِيهِم مِّنْ آيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا ۖ وَأَخَذْنَاهُم بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُونَ ﴿48﴾

४८. और हम जो निशानी उनको दिखाते थे, वे दूसरों से बढ़ी-चढ़ी होती थी[2] और हम ने उन्हें अज़ाब में पकड़ा ताकि वे रूक जायें।

The Ummah Technology Mission

---

[1] पैग़म्बरों से यह सवाल या तो इस्रा और मेराज के मौक़ा पर बैतुल मोक़द्दस में हुआ या आसमान पर किया गया, जहाँ अम्बिया (ईशदूतों) से नबी ﷺ की भेंट हुई। या أتباع का शब्द छिपा है, यानी उनके पैरोकारों (अहले किताब यहूदियों और इसाईयों) से पूछो, क्योंकि वे उनकी शिक्षाओं (तालीमात) से परिचित (वाक़िफ़) हैं और उन के ऊपर नाज़िल किताब उन के पास मौजूद हैं।

[2] इन निशानियों से वह निशानियाँ मुराद हैं जो तूफ़ान, टिड्डी दल, जुयें, मेढक और ख़ून वग़ैरह के रूप में दिखायी गयीं, जिनकी चर्चा सूर: आराफ़ आयत नं॰ १३३-१३५ में आ चुकी है। बाद की हर निशानी पहली निशानी से बढ़ कर होती, जिस से हज़रत मूसा की सच्चाई स्पष्ट (वाज़ेह) से स्पष्टतम (वाज़ेह तर) हो जाती।

وَقَالُوا يَا أَيُّهَ السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِندَكَ إِنَّنَا لَمُهْتَدُونَ ﴿49﴾

४९. और उन्होंने कहा कि हे जादूगर! हमारे लिए अपने रब से उसकी दुआ कर जिसका उस ने तुझे वादा दे रखा है। यक़ीन कर कि हम रास्ते पर लग जायेंगे।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنكُثُونَ ﴿50﴾

५०. फिर जब हम ने उन पर से वह अज़ाब हटा लिया तो उन्होंने उसी समय अपना वादा और अहद (प्रतिज्ञा) तोड़ दिया।

وَنَادَىٰ فِرْعَوْنُ فِي قَوْمِهِ قَالَ يَا قَوْمِ أَلَيْسَ لِي مُلْكُ مِصْرَ وَهَٰذِهِ الْأَنْهَارُ تَجْرِي مِن تَحْتِي أَفَلَا تُبْصِرُونَ ﴿51﴾

५१. और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम में एलान कराया और कहा, कि हे मेरी जाति के लोगो! क्या मिस्र का देश मेरा नहीं और मेरे राजमहलों के नीचें जो ये नहरें बह रही हैं ?[1] क्या तुम देखते नहीं?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هَٰذَا الَّذِي هُوَ مَهِينٌ وَلَا يَكَادُ يُبِينُ ﴿52﴾

५२. बल्कि मैं बेहतर हूँ इसकी अपेक्षा (मुक़ाबिले) जो हीन (हक़ीर) है और साफ बोल भी नहीं सकता।

فَلَوْلَا أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّن ذَهَبٍ أَوْ جَاءَ مَعَهُ الْمَلَائِكَةُ مُقْتَرِنِينَ ﴿53﴾

५३. अच्छा, इस पर सोने के कंगन क्यों नहीं उतरे[2] या उसके साथ झुण्ड और घटा बांधकर फ़रिश्ते ही आ जाते।

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهُ فَأَطَاعُوهُ إِنَّهُمْ كَانُوا قَوْمًا فَاسِقِينَ ﴿54﴾

५४. तो उस ने अपनी जाति के लोगों को फुसलाया और उन्होंने उसी की मान ली। बेशक वे सारे ही फ़ासिक़ लोग थे।

فَلَمَّا آسَفُونَا انتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنَاهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿55﴾

५५. फिर जब उन्होंने हमें क्रोधित किया तो हम ने उन से बदला लिया और सब को डुबो दिया।

The Ummah Technology Mission

---

[1] इससे मुराद नील नदी या उसकी कुछ शाखायें हैं जो उस के राजमहल के नीचे से गुज़रती थीं।

[2] उस ज़माने में मिश्र और ईरान के राजा अपनी विशेषता (ख़ुसूसियत) दिखाने के लिए सोने के कंगन पहनते थे और गले में सोने का तौक़ और सिकड़ी डालते थे जो उनकी बड़ाई की निशानी समझी जाती थी, इसी वजह से फ़िरऔन ने हज़रत मूसा के बारे में कहा कि अगर उसकी कोई मर्यादा (इज़्ज़त) की विशेषता होती और कोई जगह होती तो उसके हाथ में सोने के कंगन होने चाहिये थे।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ (56)

५६. तो हम ने उन्हें गया-गुजरा कर दिया और बाद वालों के लिए नमूना बना दिया।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ (57)

५७. और जब मरियम के बेटे की मिसाल बयान की गई तो उस से तेरी क़ौम (ख़ुशी से) पुकार उठी।

وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ؕ مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ اِلَّا جَدَلًا ؕ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ (58)

५८. और उन्होंने कहा कि हमारे देवता (माबूद) अच्छे हैं या वह? तुझ से उनका यह कहना सिर्फ़ झगड़े के मक़सद से है, बल्कि यह लोग हैं ही झगड़ालू।

اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (59)

५९. वह (ईसा عليه السلام) भी केवल बंदा (भक्त) ही है, जिस पर हम ने एहसान किया और उसे इस्राईल की औलाद के लिए (अपने क़ुदरत की) निशानी बनाया।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ (60)

६०. अगर हम चाहते तो तुम्हारे बदले फ़रिश्ते कर देते जो धरती पर एक-दूसरे के वारिस का काम करते।

وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (61)

६१. और बेशक वह (ईसा عليه السلام) क़यामत की निशानी है, तो तुम क़यामत के बारे में शक न करो और मेरी बात मान लो, यही सीधा रास्ता है।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (62)

६२. और शैतान तुम्हें रोक न दे, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ (63)

६३. और जब ईसा (عليه السلام) मोजिज़े लाये तो कहा कि मैं तुम्हारे पास हिक्मत (ज्ञान) लाया हूँ और इसलिए आया हूँ कि जिन कुछ बातों में तुम मतभेद (इख़्तिलाफ़) करते हो, उन्हें स्पष्ट (वाज़ेह) कर दूँ, तो तुम अल्लाह (तआला) से डरो और मेरा कहा मानो।

اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (64)

६४. मेरा और तुम्हारा रब सिर्फ़ अल्लाह (तआला) ही है तो तुम सब उसकी इबादत करो, सीधा रास्ता यही है।

The Ummah Technology Mission

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ۖ فَوَيْلٌ لِّلَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيمٍ (65)

६५. फिर (इस्राईल की औलाद के) गुटों ने आपस में इख़्तिलाफ़ किया, तो ज़ालिमों के लिए ख़राबी है दुख वाले दिन के अज़ाब से।

هَلْ يَنظُرُونَ إِلَّا السَّاعَةَ أَن تَأْتِيَهُم بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ (66)

६६. ये लोग सिर्फ़ क़यामत के इंतेज़ार में हैं कि वह अचानक उन पर आ पड़े और उन्हें ख़बर भी न हो।

الْأَخِلَّاءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِينَ (67)

६७. उस दिन (घनिष्ठ) दोस्त भी एक-दूसरे के दुश्मन बन जायेंगे सिवाय परहेज़गारों के।

يَا عِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَا أَنتُمْ تَحْزَنُونَ (68)

६८. हे मेरे बंदो! आज तो तुम पर कोई भय और डर है और न तुम ग़मगीन होगे।[1]

الَّذِينَ آمَنُوا بِآيَاتِنَا وَكَانُوا مُسْلِمِينَ (69)

६९. जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और थे भी वे (आज्ञाकारी) मुसलमान।

ادْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُونَ (70)

७०. तुम और तुम्हारी पत्नियाँ आनंदित (मसरूर) और ख़ुश होकर जन्नत में चले जाओ।

يُطَافُ عَلَيْهِم بِصِحَافٍ مِّن ذَهَبٍ وَأَكْوَابٍ ۖ وَفِيهَا مَا تَشْتَهِيهِ الْأَنفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ۖ وَأَنتُمْ فِيهَا خَالِدُونَ (71)

७१. उन के चारों तरफ़ सोने के थालों और सोने के गिलासों का दौर चलाया जायेगा, उन के मन जिस चीज़ को चाहें और जिस से उन की आँखें लज़्ज़त हासिल करें, सब वहाँ होगा और तुम उस में हमेशा रहोगे।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِي أُورِثْتُمُوهَا بِمَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ (72)

७२. और यही वह जन्नत है कि तुम अपने अमल के बदले इस के उत्तराधिकारी (वारिस) बनाये गये हो।

لَكُمْ فِيهَا فَاكِهَةٌ كَثِيرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُونَ (73)

७३. यहाँ तुम्हारे लिए बहुत मेवे हैं जिन्हें तुम खाते रहोगे।

إِنَّ الْمُجْرِمِينَ فِي عَذَابِ جَهَنَّمَ خَالِدُونَ (74)

७४. बेशक पापी (मुजरिम) लोग नरक के अज़ाब में हमेशा रहेंगे।

The Ummah Technology Mission

[1] यह क़यामत के दिन उन नेक लोगों से कहा जायेगा जो संसार में सिर्फ़ अल्लाह की ख़ुशी के लिए आपस में प्रेम रखते थे, जैसाकि हदीसों में भी उसकी महत्ता (फ़ज़ीलत) आयी है, बल्कि अल्लाह के लिए दोस्ती और दुश्मनी को पूरे ईमान का आधार (बुनियाद) बताया गया है।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ﴿75﴾

७५. यह (यातना) कभी भी उन से हल्की न की जायेगी और वे उसी में निराश (मायूस) पड़े होंगे।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿76﴾

७६. और हम ने उन पर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि वे ख़ुद ही ज़ालिम थे।

وَنَادَوْا يٰمٰلِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ۖ قَالَ اِنَّكُمْ مّٰكِثُوْنَ ﴿77﴾

७७. और वे पुकार-पुकार कर कहेगें कि हे मालिक,[1] तेरा रब हमारा काम ही तमाम कर दे, वह कहेगा कि तुम्हें तो (हमेशा) रहना है।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ ﴿78﴾

७८. हम तो तुम्हारे पास हक़ ले आये, लेकिन तुम में से ज़्यादातर लोग हक़ से नफ़रत करने वाले थे।

اَمْ اَبْرَمُوْٓا اَمْرًا فَاِنَّا مُبْرِمُوْنَ ﴿79﴾

७९. क्या उन्होंने किसी काम का मज़बूत इरादा कर लिया है? तो यक़ीन करो कि हम भी मज़बूत काम करने वाले हैं।

اَمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰىهُمْ ۭ بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ ﴿80﴾

८०. क्या उनका यह इरादा है कि हम उनकी छिपी बातों को और उनकी काना-फूसी को नहीं सुनते। (बेशक हम बराबर सुन रहे हैं) बल्कि हमारे भेजे हुए उन के पास ही लिख रहे हैं।

قُلْ اِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ ڰ فَاَنَا اَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ ﴿81﴾

८१. (आप) कह दीजिए कि अगर मान लिया जाये कि रहमान की औलाद हो, तो मैं सब से पहले इबादत करने वाला होता।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ﴿82﴾

८२. आकाशों और धरती और अर्श का रब जो कुछ (ये) कहते हैं उस से (बहुत) पाक है।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿83﴾

८३. अब आप उन्हें इसी वाद-विवाद और खेल-कूद में छोड़ दीजिए, यहाँ तक कि उन्हें उस दिन से पाला पड़ जाये, जिनका ये वादा दिये जाते हैं।

The Ummah Technology Mission

[1] मालिक, नरक के दरोग़ा का नाम है।

وَهُوَ الَّذِي فِي السَّمَاءِ إِلَٰهٌ وَفِي الْأَرْضِ إِلَٰهٌ ۚ وَهُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ (84)

८४. और वही आकाशों पर भी पूज्य (माबूद) है और धरती पर भी वही इबादत के लायक़ है,[1] और वह बड़ा हिक्मत वाला और पूरा जानने वाला है।

وَتَبَارَكَ الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَعِندَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ (85)

८५. और वह बड़ी बाबरकत ज़ात है जिस के पास आकाशों और धरती और उन के बीच का राज्य है, और क़यामत का इल्म भी उसी के पास है और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَن شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُونَ (86)

८६. और जिन्हें ये लोग अल्लाह के सिवाय पुकारते हैं वे सिफ़ारिश करने का हक़ नहीं रखते, हाँ, (सिफ़ारिश के लायक़ वे हैं) जो सच बात को क़ुबूल करें और उन्हें इल्म भी हो।[2]

وَلَئِن سَأَلْتَهُم مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولُنَّ اللَّهُ ۖ فَأَنَّىٰ يُؤْفَكُونَ (87)

८७. और अगर आप उन से पूछें कि उन्हें किस ने पैदा किया है तो ज़रूर यह जवाब देंगे कि अल्लाह ने, फिर ये कहाँ उल्टे जाते हैं?

وَقِيلِهِ يَا رَبِّ إِنَّ هَٰؤُلَاءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُونَ (88)

८८. और उनका (पैग़म्बरों का ज़्यादातर) यह कहना कि हे मेरे रब! बेशक यह वे लोग हैं जो ईमान नहीं लाते।

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلَامٌ ۚ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ (89)

८९. तो आप उन से मुँह फेर लें और (विदाई का) सलाम कह दें। उन्हें (ख़ुद ही) जल्द मालूम हो जायेगा।

The Ummah Technology Mission

---

[1] यह नहीं कि आकाश का पूज्य कोई और हो और धरती का कोई और, बल्कि जैसे इन दोनों का बनाने वाला एक है, पूज्य भी एक ही है। इसी के समानार्थ (मिस्ल) यह आयत है।

﴿وَهُوَ اللهُ فِي السَّمَاوَاتِ وَفِي الأَرْضِ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُونَ﴾

"और वही है सच्चा माबूद आकाशों में भी और धरती में भी, वह तुम्हारी छिपी और ज़ाहिर हालतों को भी जानता है और तुम जो कुछ अमल करते हो उसको भी जानता है।" (अल-अंआम-३)

[2] सच बात से मुराद कलिमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' है, और यह क़ुबूल करना सूझबूझ के बिना पर हो, केवल रीति-रिवाज और बुज़ुर्गों की रसम के रूप में न हो, यानी मुँह से कलमा तौहीद के अदा करने वाले को पता हो कि इस में केवल एक अल्लाह का इक़रार और दूसरे सभी उपास्यों (माबूदों) का इंकार है, फिर उस के मुताबिक अमल हो। ऐसे लोगों के हक़ में सिफ़ारिश करने वाले की सिफ़ारिश फ़ायदेमंद होगी, या यह मुराद है कि सिफ़ारिश करने का हक़ सिर्फ़ ऐसे लोगों को मिलेगा जो सच का इक़रार करने वाले होंगे, जैसे अम्बिया, औलिया और फ़रिश्ते, न कि झूठे माबूदों को जिन्हें मुश्रिक अपना सिफ़ारिशी समझते हैं।

सूरतुद दुख़ान-४४

سُورَةُ الدُّخَانِ

सूरः दुख़ान मक्का में नाज़िल हुई और इस में उनसठ आयतें और तीन रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حٰمٓ ﴿1﴾

१. हा॰मीम॰।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿2﴾

२. क़सम है इस खुली किताब की।

اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ ﴿3﴾

३. बेशक हम ने इसे मुबारक रात[1] में नाज़िल किया है। बेशक हम बाख़बर कर देने वाले हैं।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ ﴿4﴾

४. उसी रात में हर अहम काम का फ़ैसला किया जाता है।

اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ﴿5﴾

५. हमारे पास से आदेश होकर, हम ही हैं रसूल बनाकर भेजने वाले।

---

[1] शुभ रात्रि (मुबारक रात) से मुराद (लैलतुल क़द्र है), जैसाकि दूसरे मुक़ाम पर बयान (वर्णन) है। (إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ) (सूरतुल क़द्र) "हम ने यह क़ुरआन शबे क़द्र में नाज़िल किया।" यह मुबारक रात रमज़ान के आख़िरी दस रात की विषम (ताक) रातों में कोई एक रात होती है। यहाँ क़द्र (सम्मान) की इस रात को मुबारक रात कहा गया है। इस के मुबारक होने में क्या शक हो सकता है, एक तो इस में क़ुरआन का अवतरण (नुज़ूल) हुआ। दूसरे, इस में फ़रिश्तों और जिब्रील का नुज़ूल होता है। तीसरे, इस में पूरे साल होने वाले मामले का फ़ैसला किया जाता है (जैसाकि आगे आ रहा है)। चौथे, इस रात की इबादत (उपासना) हज़ार महीने (यानी ८३ साल ४ महीने) की इबादत से बेहतर है, शबे क़द्र या "लैलये मुबारकह" में क़ुरआन के नुज़ूल का मतलब यह है कि इस रात नबी ﷺ पर पाक क़ुरआन नाज़िल होना शुरू हुआ या यह मुराद है कि लौहे महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) से इसी रात बैतुल इज़्ज़त (सम्मान गृह) में नाज़िल किया गया जो दुनिया के आकाश पर है, फिर वहाँ से ज़रूरत के ऐतबार से २३ सालों तक अलग-अलग वक़्त में नबी ﷺ पर नाज़िल होता रहा। कुछ ने लैलये मुबारकह से शाबान महीने की पंद्रहवीं रात मुराद लिया है लेकिन यह सही नहीं है, जब क़ुरआन के खुले शब्दों से क़ुरआन का शबे क़द्र में नाज़िल होना साबित है तो इस से "शबे बराअत" मुराद लेना कभी भी सही नहीं, इस के अलावा "शबेबराअत" (शाबान महीने की पंद्रहवीं रात) के बारे में जितनी रिवायतें (वर्णन) है जिन में उसकी महत्ता (फ़ज़ीलत) का बयान है या उन में उसे फ़ैसले की रात कहा गया है, यह सभी बयान सुबूत के आधार पर कमज़ोर और ज़ईफ़ हैं, यह क़ुरआन के खुले शब्दों का मुक़ाबला किस तरह कर सकती हैं?

The Ummah Technology Mission

६. आप के रब की कृपा (रहमत) से, वही है सुनने वाला और जानने वाला।

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿6﴾

७. जो रब है आकाशों का और धरती का और जो कुछ उनके बीच है, अगर तुम यक़ीन करने वाले हो।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ﴿7﴾

८. कोई इबादत के लायक़ नहीं उसके सिवाय, वही ज़िन्दा करता है और मारता है, वही तुम्हारा रब है और तुम्हारे पिछले पूर्वजों का।

لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ؕ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿8﴾

९. वल्कि वे शक में पड़े खेल रहे हैं।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ ﴿9﴾

१०. आप उस दिन के इंतेज़ार में रहें जबकि आकाश खुला हुआ धुआँ लायेगा।

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ﴿10﴾

११. जो लोगों को घेर लेगा, यह दुखदायी अज़ाब है।

يَّغْشَى النَّاسَ ؕ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿11﴾

१२. (कहेंगे कि) हे हमारे रब! यह अज़ाब हम से दूर कर हम ईमान क़ुबूल करते हैं।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ ﴿12﴾

१३. उन के लिए नसीहत कहाँ है? साफ़ तौर से बयान करने वाले पैग़म्बर उन के पास आ चुके।

اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ﴿13﴾

१४. फिर भी उन्होंने उन से मुँह फेरा और कह दिया कि यह सिखाया-पढ़ाया हुआ दीवाना है।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ﴿14﴾

१५. हम अज़ाब को थोड़ी दूर कर देंगे तो तुम फिर अपनी उसी हालत में आ जाओगे।

اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ عَآئِدُوْنَ ﴿15﴾

१६. जिस दिन हम बड़ी कड़ी पकड़ पकड़ेंगे[1] यक़ीनी तौर से हम बदला लेने वाले हैं।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ ﴿16﴾

[1] इस से मुराद बद्र के जंग की पकड़ है, जिस में सत्तर काफ़िर मारे गये और सत्तर क़ैदी बना लिये गये। दूसरी व्याख्या (तफ़सीर) के अनुसार यह कड़ी पकड़ क़यामत (प्रलय) के दिन होगी। इमाम शौकानी फ़रमाते हैं कि यह उस पकड़ की ख़ास चर्चा है जो बद्र के जंग में हुई, क्योंकि क़ुरैश ही के बारे में इसकी चर्चा है, यद्यपि (अगरचे) क़यामत के दिन भी अल्लाह तआला कड़ी पकड़ करेगा, फिर भी वह पकड़ सामान्य (आम) होगी जिस में हर बुरे लोग शामिल होंगे।

The Ummah Technology Mission

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ ﴿17﴾

१७. और बेशक हम इस से पहले फ़िरऔन की जाति की (भी) परीक्षा ले चुके हैं,[1] जिन के पास (अल्लाह का) सम्मानित (बावक़ार) रसूल आया।

اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ؕ اِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ ﴿18﴾

१८. कि अल्लाह (तआला) के बंदों को मुझे दे दो[2] यक़ीन करो कि मैं तुम्हारे लिए ईमानदार रसूल हूँ।

وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ﴿19﴾

१९. और तुम अल्लाह तआला के सामने सरकशी न दिखाओ, मैं तुम्हारे सामने खुला सुबूत लाने वाला हूँ।

وَاِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿20﴾

२०. और मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूँ, इस से कि तुम मुझे पत्थरों से मार डालो।

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿21﴾

२१. और अगर तुम मुझ पर ईमान नहीं लाते तो मुझ से अलग ही रहो।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿22﴾

२२. फिर उन्होंने अपने रब से दुआ की कि ये सब पापी लोग हैं।

فَاَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿23﴾

२३. (हम ने कह दिया) कि रातों-रात तू मेरे बंदों को लेकर निकल, बेशक तेरा पीछा किया जायेगा।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿24﴾

२४. और तू सागर को ठहरा हुआ छोड़कर चला जा, बेशक यह सेना डूबो दी जायेगी।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿25﴾

२५. वे बहुत से बाग़ और जलस्रोत (चश्मे) छोड़ गये।

---

[1] परीक्षा (इम्तेहान) लेने का मतलब है कि हम ने उन्हें दुनियावी सुख-सुविधा और सम्पन्नता (ख़ुशहाली) दी, और फिर अपना पैग़म्बर भी उनकी तरफ़ भेजा, लेकिन न उन्होंने अल्लाह के वरदानों (नेमतों) का शुक्रिया अदा किया और न पैग़म्बर पर ईमान लाये।

[2] عِبَادَ اللّٰهِ (अल्लाह के बंदों) से मुराद यहाँ मूसा ﷺ की जाति इस्राईल की औलाद है, जिसे फ़िरऔन ने ग़ुलाम बना रखा था, हज़रत मूसा ﷺ ने अपनी जाति की आज़ादी की माँग की।

The Ummah Technology Mission

२६. और खेतियाँ और अच्छी रिहाईश।	وَّ زُرُوۡعٍ وَّ مَقَامٍ كَرِيۡمٍ ﴿26﴾
२७. और वे सुखदायी चीजें जिन में सुख भोग रहे थे।	وَّنَعۡمَةٍ كَانُوۡا فِيۡهَا فٰكِهِيۡنَ ﴿27﴾
२८. इसी तरह हो गया, और हम ने उन सब का वारिस दूसरी क़ौम को बना दिया।[1]	كَذٰلِكَ ۚ وَ اَوۡرَثۡنٰهَا قَوۡمًا اٰخَرِيۡنَ ﴿28﴾
२९. तो उन पर न तो आकाश और धरती रोये[2] और न उन्हें मौक़ा मिला।	فَمَا بَكَتۡ عَلَيۡهِمُ السَّمَآءُ وَالۡاَرۡضُ وَمَا كَانُوۡا مُنۡظَرِيۡنَ ﴿29﴾
३०. और हम ने (ही) इस्राईल की औलाद को (बहुत) ज़िल्लत वाली सज़ा से मुक्ति (नजात) दी।	وَلَقَدۡ نَجَّيۡنَا بَنِىۡۤ اِسۡرَآءِيۡلَ مِنَ الۡعَذَابِ الۡمُهِيۡنِ ﴿30﴾
३१. (जो) फ़िरऔन की तरफ़ से (हो रही) थी। हक़ीक़त में वह सरकश और सीमा (हद) पार करने वालों में से था।	مِنۡ فِرۡعَوۡنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الۡمُسۡرِفِيۡنَ ﴿31﴾
३२. और हम ने जान बूझकर इस्राईल की औलाद को दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत अता की।[3]	وَلَقَدِ اخۡتَرۡنٰهُمۡ عَلٰى عِلۡمٍ عَلَى الۡعٰلَمِيۡنَ ﴿32﴾
३३. और हम ने उन्हें ऐसी निशानियाँ अता कीं, जिन में खुली परीक्षा (इम्तेहान) थी।	وَاٰتَيۡنٰهُمۡ مِّنَ الۡاٰيٰتِ مَا فِيۡهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيۡنٌ ﴿33﴾

The Ummah Technology Mission

[1] कुछ के क़रीब इस से मुराद इस्राईल की औलाद हैं, लेकिन कुछ के ख़्याल से इस्राईली वंश का दोबारा मिश्र आना तारीख़ी ऐतबार से साबित नहीं, इसलिए मिश्र देश की उत्तराधिकारी (वारिस) कोई दूसरी जाति बनी, इस्राईल की औलाद नहीं।

[2] यानी इन फ़िरऔनियों के नेक काम थे ही नहीं जो आकाश पर चढ़ते और उन के सिलसिले के टूटने (तबाह होने) पर आकाश रोते, न धरती ही पर वह अल्लाह की इबादत करते थे कि उस से वंचित (महरूम) होने पर धरती रोती। मुराद यह है कि आकाश और धरती में से कोई उन के तबाह होने पर रोने वाला नहीं था। (फ़तहुल क़दीर)

[3] इस दुनिया से मुराद इस्राईल की औलाद के ज़माने की दुनिया है। आम तौर से सारी दुनिया नहीं है, क्योंकि पाक क़ुरआन में मोहम्मद ﷺ की उम्मत को (كُنتُم خَيْرَ أُمَّةٍ) की उपाधि (लक़ब) से सम्मानित (नवाज़ा) किया गया है, यानी इस्राईल की औलाद अपने ज़माने में दुनिया वालों पर फ़ज़ीलत रखती थी, उनकी यह फ़ज़ीलत उस योग्यता (क़ाबलियत) के सबब थी जिसे अल्लाह ही जानता है।

إِنَّ هَٰؤُلَاءِ لَيَقُولُونَ ﴿34﴾

३४. यह लोग तो यही कहते हैं।

إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُولَىٰ وَمَا نَحْنُ بِمُنشَرِينَ ﴿35﴾

३५. कि (आख़िरी चीज) यही हमारा पहली बार (दुनिया से) मर जाना है और हम दोबारा उठाये नहीं जायेंगे।

فَأْتُوا بِآبَائِنَا إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ﴿36﴾

३६. अगर तुम सच्चे हो तो हमारे पूर्वजों (बुज़ुर्गों) को ले आओ।

أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ وَالَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ أَهْلَكْنَاهُمْ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا مُجْرِمِينَ ﴿37﴾

३७. क्या ये लोग बेहतर हैं या तुब्बअ की क़ौम के लोग और जो उन से भी पहले थे? हम ने उन सब को बरबाद कर दिया, बेशक वे पापी थे।[1]

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لَاعِبِينَ ﴿38﴾

३८. और हम ने धरती और आकाशों और उन के बीच की चीज़ों को खेल के रूप में पैदा नहीं किया।

مَا خَلَقْنَاهُمَا إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿39﴾

३९. बल्कि हम ने उन्हें सही मक़सद के साथ ही पैदा किया है, लेकिन ज़्यादातर लोग नहीं जानते।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيقَاتُهُمْ أَجْمَعِينَ ﴿40﴾

४०. बेशक फ़ैसले का दिन उन सबका निश्चित (मुक़र्रर) समय है।

يَوْمَ لَا يُغْنِي مَوْلًى عَن مَّوْلًى شَيْئًا وَلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿41﴾

४१. उस दिन कोई दोस्त किसी दोस्त के कुछ भी काम न आयेगा और न उनकी मदद की जायेगी।

إِلَّا مَن رَّحِمَ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿42﴾

४२. लेकिन जिस पर अल्लाह की दया (रहमत) हो जाये, वह बड़ा शक्तिशाली (ग़ालिब) और दया (रहम) करने वाला है।

[1] यानी यह मक्का के काफ़िर तुब्बअ और उन से पहले की जातियाँ आद और समूद आदि (वग़ैरह) से शक्तिशाली और अच्छे हैं। जब हम ने उनको पापों के बदले में उन से ज़्यादा शक्ति और बल रखने पर भी नाश कर दिया तो यह क्या महत्व (अहमियत) रखते हैं? तुब्बअ से मुराद सबा की जाति है, सबा में हिम्यर जाति थी, यह अपने राजा को तुब्बअ कहते थे, जैसे रूम के राजा को कैसर, ईरान के राजा को किसरा, मिश्र के राजा को फ़िरऔन और हब्शा के राजा को नजाशी कहा जाता था।

The Ummah Technology Mission

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّومِ (43)

४३. बेशक ज़क्कूम (थूहड़) का पेड़।

طَعَامُ الْأَثِيمِ (44)

४४. पापी का खाना है।

كَالْمُهْلِ يَغْلِي فِي الْبُطُونِ (45)

४५. जो तलछट की तरह है और पेट में खौलता रहता है।

كَغَلْيِ الْحَمِيمِ (46)

४६. तेज गर्म पानी (के खौलने) की तरह।

خُذُوهُ فَاعْتِلُوهُ إِلَىٰ سَوَاءِ الْجَحِيمِ (47)

४७. उसे पकड़ लो फिर घसीटते हुए नरक के बीच तक पहुँचाओ।

ثُمَّ صُبُّوا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيمِ (48)

४८. फिर उस के सिर पर बहुत गर्म पानी की यातना (अज़ाब) बहाओ।

ذُقْ إِنَّكَ أَنتَ الْعَزِيزُ الْكَرِيمُ (49)

४९. (उस से कहा जायेगा) चखता जा, तू तो बड़ी इज़्ज़त और एहतेराम (सम्मान) वाला था।

إِنَّ هَٰذَا مَا كُنتُم بِهِ تَمْتَرُونَ (50)

५०. यही वह चीज है जिस में तुम संदेह (शक) किया करते थे।

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي مَقَامٍ أَمِينٍ (51)

५१. बेशक (अल्लाह से) डरने वाले शान्ति की जगह में होंगे।

فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ (52)

५२. बागों और जल स्रोतों (चश्मों) में।

يَلْبَسُونَ مِن سُندُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقَابِلِينَ (53)

५३. बारीक और मुलायम रेशमी कपड़े पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे।

كَذَٰلِكَ وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ (54)

५४. यह उसी तरह है, और हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली अप्सराओं (हूरों) से उनका विवाह कर देंगे।

يَدْعُونَ فِيهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ آمِنِينَ (55)

५५. निश्चिन्तता (बेख़ौफ़ी) से वहाँ हर तरह के मेवों की माँगें कर रहे होंगे।

لَا يَذُوقُونَ فِيهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُولَىٰ ۖ وَوَقَاهُمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ (56)

५६. वहाँ वे मौत का मजा चखने वाले नही सिवाय पहली मौत के, (जो वे मर चुके) उन्हें अल्लाह (तआला) ने नरक के अज़ाब से बचा दिया।

The Ummah Technology Mission

فَضْلًا مِّن رَّبِّكَ ۚ ذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ ﴿57﴾

५७. यह केवल तेरे रब की कृपा (रहमत) है।[1] यही है बड़ी कामयाबी।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنَاهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُونَ ﴿58﴾

५८. हम ने इस (कुरआन) को तेरी भाषा में आसान कर दिया ताकि वे नसीहत हासिल करें।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُم مُّرْتَقِبُونَ ﴿59﴾

५९. अब तू प्रतीक्षा (इंतेज़ार) कर ये भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

سُورَةُ الْجَاثِيَةِ

सूरतुल जासिय:-४५

सूर: जासिय: मक्के में नाज़िल हुई, इस में सैंतीस आयतें और चार रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حم ﴿1﴾

१. हा॰मीम॰।

تَنزِيلُ الْكِتَابِ مِنَ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿2﴾

२. यह किताब अल्लाह जबरदस्त हिक्मत वाले की तरफ से नाज़िल हुई है।

إِنَّ فِي السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ لَآيَاتٍ لِّلْمُؤْمِنِينَ ﴿3﴾

३. आकाशों और धरती में ईमानवालों के लिए बेशक बहुत सी निशानियाँ हैं।

وَفِي خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِن دَابَّةٍ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ﴿4﴾

४. और ख़ुद तुम्हारे जन्म में और जानवरों को फैलाने में यक़ीन रखने वाले समुदाय (क़ौम) के लिए बहुत-सी निशानियाँ हैं।

وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا أَنزَلَ اللَّهُ مِنَ السَّمَاءِ مِن رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيفِ الرِّيَاحِ آيَاتٌ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ﴿5﴾

५. और रात-दिन के बदलने में और जो कुछ जीविका (रिज़्क़) अल्लाह (तआला) आकाश से नाज़िल करके धरती को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा कर देता है, उस में और हवाओं के बदलने में भी उन लोगों के लिए जो अक़्ल

[1] जिस तरह हदीस में भी है। फ़रमाया : यह बात जान लो कि तुम में से किसी का अमल उसे जन्नत में नहीं ले जायेगा। सहाबा (आप के साथियों) ने सवाल किया, "अल्लाह के रसूल! आप को भी?" फ़रमाया, "हाँ मुझे भी, लेकिन यह कि अल्लाह मुझे अपनी दया (रहमत) और करूणा (शफ़क़त) में ढाँप लेगा।" (सहीह बुख़ारी, किताबर्रिक़ाक़, बाबुल क़स्दे वल मुदावमते अलल अमल और मुस्लिम ऊपरी किताब)

The Ummah Technology Mission

रखते हैं, निशानियाँ हैं।[1]

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِاَيِّ حَدِيْثٍۭ بَعْدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ⑥

६. यह हैं अल्लाह (तआला) की आयतें जिन्हें हम आप को हक़ के साथ सुना रहे हैं, तो अल्लाह (तआला) और उस की आयतों के बाद ये किस बात पर ईमान लायेंगे।

وَيْلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيْمٍ ⑦

७. धिक्कार (और खेद है) हर झूठे पापी पर।[2]

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ⑧

८. जो अल्लाह की आयतें अपने सामने पढ़ी जाती हुई सुने फिर भी गर्व करता हुआ इस प्रकार अड़ा रहे जैसेकि सुनी ही नहीं, तो ऐसे लोगों को कष्टदायी अज़ाब की ख़बर (पहुँचा) दें।

وَاِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيٰتِنَا شَيْـًٔا ۨاتَّخَذَهَا هُزُوًا ۭ اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑨

९. और वह जब हमारी आयतों में से किसी आयत की ख़बर पा लेता है तो उसका मज़ाक उड़ाता है, यही लोग हैं जिन के लिए अपमान (ज़िल्लत) वाला अज़ाब है।

مِنْ وَّرَاۗىِٕهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْـًٔا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْلِيَاۗءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ⑩

१०. उन के पीछे नरक है, जो कुछ उन्होंने हासिल किया था वह उन्हें कुछ भी फ़ायेदा न देगा और न वह (कुछ काम आयेंगे) जिन को उन्होंने अल्लाह के सिवाय वली (और कार्यक्षम) बना रखा था, उनके लिए तो बड़ा भारी अज़ाब है।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ⑪

११. यह (सरासर) हिदायत है[3] और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों को न माना उन के लिए बड़ा कठिन अज़ाब है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] कभी हवा का रूख उत्तर और दक्षिण को, कभी पूरब और पश्चिम को होता है, कभी पानी वाली हवायें, कभी थलीय हवायें, कभी रात को, कभी दिन को, कुछ वर्षा वाली, कुछ फ़ायदेमंद, कुछ हवायें आत्मा (रूह) का आहार (गिज़ा) और कुछ सब कुछ झुलसा देने वाली और केवल धूल धप्पड़ का तूफ़ान। हवा की इतनी क़िस्में भी प्रमाणित (साबित) करते हैं कि इस दुनिया का कोई चलाने वाला है जो सिर्फ़ एक है, दो या ज़्यादा नहीं। सभी इख़्तियार का मालिक वही एक है, उन में कोई उसका साझी नहीं, हर तरह का निज़ाम वही चलाता है, किसी और के पास तनिक भी हक़ नहीं। इसी मायने की आयत सूर: बक़र: की आयत नं॰ १६४ भी है।

[2] أَفَّاك (अफ़्फ़ाक) كَذَّاب के मतलब में, أَثِيم (महापापी)। وَيْل विनाश (हलाक) या नरक की एक वादी का नाम।

[3] यानी क़ुरआन, क्योंकि उसके नुज़ूल का मक़सद ही यह है कि लोगों को कुफ़्र और शिर्क के अंधेरों से निकालकर ईमान की रौशनी में लाया जाये, इसलिए उस के सरासर हिदायत होने में तो कोई शक नहीं, लेकिन हिदायत मिलेगी तो उसे ही जो उस के लिए अपना सीना खोल देगा।

१२. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए समुद्र को तावे बना दिया ताकि उस के हुक्म से उस में नावें चलें और तुम उसका फ़ज़्ल ढूंढो, और ताकि तुम उसका शुक्रिया अदा करो।

اَللّٰهُ الَّذِیْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِیَ الْفُلْكُ فِیْهِ بِاَمْرِهٖ وَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿12﴾

१३. और आकाश और धरती की हर चीज को भी उस ने अपनी तरफ़ से तुम्हारे वश में कर दिया है,[1] जो लोग ख़्याल करें, बेशक वे इस में बहुत सी निशानियाँ पायेंगे।

وَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الْاَرْضِ جَمِیْعًا مِّنْهُ ؕ اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ یَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿13﴾

१४. आप ईमानवालों से कह दें कि वह उन लोगों को माफ़ कर दिया करें जो अल्लाह के दिनों की उम्मीद नहीं रखते, ताकि अल्लाह तआला एक क़ौम को उन के करतूतों का बदला दे।

قُلْ لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یَغْفِرُوْا لِلَّذِیْنَ لَا یَرْجُوْنَ اَیَّامَ اللّٰهِ لِیَجْزِیَ قَوْمًۢا بِمَا كَانُوْا یَكْسِبُوْنَ ﴿14﴾

१५. जो नेकी करेगा वह अपने ख़ुद के भले के लिए और जो बुराई करेगा उसका बुरा नतीजा उसी पर है; फिर तुम सब अपने रब की तरफ़ लौटाये जाओगे।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَ مَنْ اَسَآءَ فَعَلَیْهَا ؗ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ﴿15﴾

१६. और बेशक हम ने इस्राईल की औलाद को किताब, मुल्क[2] और नबूवत दिया था, और हम ने उन्हें पाक (और अच्छी) रोज़ी दी थी, और उन्हें दुनिया वालों पर श्रेष्ठता (फ़ज़ीलत) दी थी।

وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ الْكِتٰبَ وَ الْحُكْمَ وَ النُّبُوَّةَ وَ رَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ وَ فَضَّلْنٰهُمْ عَلَی الْعٰلَمِیْنَ ﴿16﴾

१७. और हम ने उन्हें धर्म की खुली निशानियाँ (दलील) अता कीं, फिर उन्होंने अपने पास इल्म के पहुँच जाने के बाद आपस के द्वेष-विवाद (ज़िद-बहस) के सबब ही इख़्तिलाफ़ कर डाला, ये जिन-जिन बातों में इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उन

وَ اٰتَیْنٰهُمْ بَیِّنٰتٍ مِّنَ الْاَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْۤا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ۙ بَغْیًۢا بَیْنَهُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ یَقْضِیْ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ﴿17﴾

[1] वश में करने से मुराद यही है कि उनको तुम्हारी सेवा के लिए नियुक्त (मुतअय्यन) कर दिया है, तुम्हारे अपने फ़ायदे तुम्हारी रोज़ी सब इन्हीं से संबंधित है, जैसे चाँद, सूरज, जगमगाते तारे, वर्षा, बादल और हवा आदि हैं, और अपनी तरफ़ से का मतलब अपनी ख़ास रहमत और दया से।

[2] किताब से मुराद धर्मग्रंथ तौरात, حکم (हुक्म) से मुल्क और शासन या अक़्ल और फ़ैसले की वह योग्यता (क़ाबलियत) है जो झगड़ों और लोगों के बीच फ़ैसला करने के लिए ज़रूरी है।

The Ummah Technology Mission

का फ़ैसला क़यामत के दिन उन के बीच तेरा रब (ख़ुद) करेगा।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْاَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿18﴾

१८. फिर हम ने आप को धर्म के (वाज़ेह) रास्ता पर क़ायम कर दिया,[1] तो आप उसी पर लगे रहें और नादानों की इच्छाओं का अनुगमन (पैरवी) न करें।

اِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ ﴿19﴾

१९. (याद रखें) कि ये लोग कभी अल्लाह के सामने आप के कुछ काम नहीं आ सकते। (समझ लो कि) ज़ालिम लोग आपस में एक-दूसरे के साथी होते हैं और परहेज़गारों का साथी (संरक्षक) अल्लाह (महान) है।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ﴿20﴾

२०. यह (क़ुरआन) लोगों के लिए सूझ की बातें और हिदायत और रहमत है, उस गिरोह के लिए जो यक़ीन रखता है।

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿21﴾

२१. क्या उन लोगों का जो बुरे काम करते हैं, यह ख़्याल है कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाये और नेकी के काम किये कि उनका मरना-जीना बराबर हो जाये, बुरा फ़ैसला है वह जो वे कर रहे हैं।

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿22﴾

२२. और आकाशों और धरती को अल्लाह ने बहुत ही इंसाफ़ के साथ पैदा किया है और ताकि हर इंसान को उसके किये हुए काम का पूरा बदला दिया जाये और वे ज़ुल्म न किये जायेंगे।[2]

---

[1] شريعت (शरीअत) का लफ़्ज़ी मायना है रास्ता, जमाअत और रिवाज। बड़े रास्ते को भी शारेअ कहा जाता है कि वह मक़सद और लक्ष्य तक पहुँचाता है, इसलिए यहाँ शरीअत से मुराद वह धर्म (दीन) है जो अल्लाह ने अपने बंदों के लिए नियुक्त (मुक़र्रर) किया है ताकि लोग उस पर चल कर अल्लाह की मर्ज़ी का लक्ष्य हासिल कर लें। आयत का मतलब है कि हम ने आप को धर्म के एक साफ़ रास्ता और रिवाज पर क़ायम कर दिया है जो आप को सच तक पहुँचायेगा।

[2] और यही इंसाफ़ है कि क़यामत के दिन बेलाग फ़ैसला होगा और हर एक को उस के अमल के ऐतबार से अच्छा या बुरा बदला मिलेगा। यह नहीं होगा कि अच्छे बुरे दोनों के साथ बराबर सुलूक करे, जैसाकि काफ़िरों का भ्रम है, जिसका खंडन (तरदीद) पिछली कई आयतों में किया

The Ummah Technology Mission

२३. क्या आप ने उसे भी देखा जिस ने अपनी मनोकांक्षा को अपना पूज्य (माबूद) बना रखा है, और समझ-बूझ के बावजूद भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया है, और उसके कान और दिल पर मुहर लगा दी है और उसकी आँख पर भी पर्दा डाल दिया है? अब ऐसे इंसान को अल्लाह के बाद कौन मार्गदर्शन (रहनुमाई) करा सकता है। क्या अब भी तुम नसीहत हासिल नहीं करते?

أَفَرَءَيْتَ مَنِ ٱتَّخَذَ إِلَٰهَهُۥ هَوَىٰهُ وَأَضَلَّهُ ٱللَّهُ عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِۦ وَقَلْبِهِۦ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِۦ غِشَٰوَةً فَمَن يَهْدِيهِ مِنۢ بَعْدِ ٱللَّهِ ۚ أَفَلَا تَذَكَّرُونَ (23)

२४. और उन्होंने कहा कि हमारा जीवन केवल दुनियावी जीवन ही है; हम मरते हैं और जीते हैं और हमें केवल काल (ज़माना) ही मार डालता है। (हक़ीक़त में) उन्हें उसका कुछ ज्ञान (इल्म) ही नहीं; ये तो केवल अंदाज़ा और अटकल से ही काम ले रहे हैं।

وَقَالُوا۟ مَا هِىَ إِلَّا حَيَاتُنَا ٱلدُّنْيَا نَمُوتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ إِلَّا ٱلدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُم بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۖ إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّونَ (24)

२५. और जब उन के सामने हमारी वाज़ेह आयतों का पाठ (तिलावत) किया जाता है तो उन के पास इस क़ौल के सिवाय कोई दलील नही होती कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को लाओ।

وَإِذَا تُتْلَىٰ عَلَيْهِمْ ءَايَٰتُنَا بَيِّنَٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّآ أَن قَالُوا۟ ٱئْتُوا۟ بِـَٔابَآئِنَآ إِن كُنتُمْ صَٰدِقِينَ (25)

२६. (आप) कह दीजिए कि अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दा करता है फिर तुम्हें मार डालता है, फिर तुम्हें क़यामत के दिन जमा करेगा जिस में कोई शक नहीं, लेकिन ज़्यादातर लोग नही जानते।

قُلِ ٱللَّهُ يُحْيِيكُمْ ثُمَّ يُمِيتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلَىٰ يَوْمِ ٱلْقِيَٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ ٱلنَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (26)

२७. और आकाशों और धरती का मुल्क अल्लाह ही का है, और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी उस दिन असत्यवादी (बातिल परस्त) बड़े नुक़सान में पड़ेंगे।

وَلِلَّهِ مُلْكُ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلْأَرْضِ ۚ وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَخْسَرُ ٱلْمُبْطِلُونَ (27)

The Ummah Technology Mission

गया है। क्योंकि दोनों को बराबरी के स्तर पर रखना नाइंसाफी है। इसलिए जिस तरह काँटा बो कर अंगूर की पैदावार हासिल नहीं की जा सकती इसी तरह बुराई करके वह मुक़ाम हासिल नहीं हो सकता जो अल्लाह ने ईमान वालों के लिए रखा है।

२८. और आप देखेंगे कि हर क़ौम घुटनों के बल गिरी होगी, हर गिरोह अपने कर्मपत्र (आमालनामा) की तरफ़ बुलाया जायेगा, आज तुम्हें अपने किये का बदला दिया जायेगा।

وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ اُمَّةٍ تُدْعٰٓى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿28﴾

२९. यह है हमारी किताब जो तुम्हारे बारे में सच-सच बोल रही है, हम तुम्हारे कर्म (अमल) लिखवाते जाते थे।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿29﴾

३०. तो जो ईमान लाये और उन्होंने नेकी के काम किये[1] तो उनको उन का रब अपनी कृपा (रहमत) के साये में ले लेगा, यही स्पष्ट (वाजेह) कामयाबी है।

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ﴿30﴾

३१. लेकिन जिन लोगों ने कुफ़्र किया तो (मैं उन से कहूँगा) कि क्या मेरी आयतें तुम्हें सुनायी नहीं जाती थीं? फिर भी तुम गर्व (फ़ख़्र) करते रहे और तुम थे ही पापी लोग।

وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۫ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ﴿31﴾

३२. और जब कभी कहा जाता कि अल्लाह का वादा यक़ीनी तौर से सच है और क़यामत के आने में कोई शक नहीं तो तुम जवाब देते थे कि हम नहीं जानते कि क़यामत क्या (चीज़) है? हमें कुछ यों ही सोच-विचार हो जाता है लेकिन हमें यक़ीन नहीं।

وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ ۙ اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ﴿32﴾

The Ummah Technology Mission

[1] यहाँ भी ईमान के साथ नेकी के काम की चर्चा करके उसकी अहमियत दिखा दिया और नेकी के अमल वह अमल हैं जो सुन्नत के मुताबिक़ किये जायें, न कि हर वह अमल जिसे इंसान अपने मन से अच्छा समझ ले और उसे बड़ी पाबन्दी और रूचि से करे, जैसे बहुत सी बिदआत (नई बातें) धार्मिक गिरोहों में प्रचलित (राईज) हैं और जो उनके क़रीब फ़र्ज़ और ज़रूरी धार्मिक कर्मों से भी ज़्यादा महत्व रखती हैं, इसलिए वाजिबात और सुन्नत का छोड़ना तो उन के यहाँ आम है, लेकिन बिदअत ऐसी ज़रूरत है कि उन में किसी तरह की सुस्ती की सोच ही नहीं है, जब कि नबी ﷺ ने उसे सब से ज़्यादा बुरा काम बताया है।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ (33)

३३. और उन पर अपने कर्मों (अमल) की बुराईयाँ खुल गयीं और जिसे वे मज़ाक़ में उड़ा रहे थे, उस ने उन्हें घेर लिया।

وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (34)

३४. और कह दिया गया कि आज हम तुम्हें भुला देंगे जैसाकि तुम ने अपने इस दिन के मिलने को भुला दिया था,[1] तुम्हारा ठिकाना नरक है और तुम्हारी मदद करने वाला कोई नहीं।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ (35)

३५. यह इसलिए है कि तुमने अल्लाह (तआला) की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया था और दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोखे में डाल रखा था, तो आज के दिन न तो ये (नरक) से निकाले जायेंगे और न उनसे मजबूरी और बहाना क़ुबूल किया जायेगा।[2]

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (36)

३६. तो अल्लाह के लिए सब तारीफ़ है, जो आकाशों और धरती और सारी दुनिया का रब है।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (37)

३७. और सारी (तारीफ़ और) बड़ाई आकाशों और धरती में उसी की है, और वही प्रभावशाली (ग़ालिब) और हिक्मत वाला है।

The Ummah Technology Mission

---

[1] जैसे हदीस में आता है कि अल्लाह अपने कुछ बंदों से कहेगा : "क्या मैंने तुझे पत्नी नहीं दी थी, क्या मैंने तुझे इज़्ज़त नहीं दी थी, क्या मैंने घोड़े और बैल इत्यादि (वग़ैरह) तेरे अधीन (मातहत) में नहीं किये थे ? तू सरदारी भी करता और चुंगी भी लेता रहा।" वह कहेगा "हाँ यह ठीक है मेरे रब !" अल्लाह तआला उस से सवाल करेगा, "क्या तुझे मुझ से मिलने का यक़ीन था?" वह कहेगा, "नहीं।" अल्लाह फ़रमायेगा «فَالْيَوْمَ أَنْسَاكَ كَمَا نَسِيتَنِي» (तो आज मैं तुझे नरक में डालकर भूल जाऊँगा जैसे तू मुझे भूला रहा) (सहीह मुस्लिम, किताबुज़्ज़ुहद)

[2] यानी अल्लाह तआला की निशानियों और हुक्म का मज़ाक़ और दुनिया के धोखे में लिप्त (मश्ग़ूल) रहना, यह दो गुनाह ऐसे हैं जिन्होंने तुम्हें नरक के अज़ाब का पात्र (मुस्तहिक़) बना दिया। अब उस से निकलने की उम्मीद नहीं और न इस बात की उम्मीद कि किसी मौक़ा पर तुम्हें तौबा और क्षमा-याचना का मौक़ा दे दिया जाये और तुम माफ़ी (क्षमा) माँगकर अल्लाह को मना लो।